प्रेम पत्र

4-76

प्रिय ओम मेहता गृह राज्य मन्त्री जी,

सादर प्रणाम,

मैंने आपका सितारा चढ़ते हुए देखा है इसलिए मुझे आपसे गहरा प्रेम है।

यह जानकर कोई अचम्भा नहीं हुआ कि आपने सरकारी लाटरियों को रोकने का फैसला नहीं किया। क्योंकि अगर आप लाटरियों पर प्रतिबन्ध लगवा देते तो इससे देशवासियों को यह साबित हो जाता कि आपको किस्मत पर कोई विश्वास नहीं रहा है। ऐसा करने से छोटे लोग सुन्दर सपनों से भी वंचित रह जाते।

बीस सूत्री कार्यक्रम को तेजी से चालू करने का फल यह हुआ है कि अब महंगाई' के जमाने कि बजाय 'गिराई' का युग शुरू हो गया है। गेहूं, चावल चीनी सबके दाम गिरे हैं और गिर रहे हैं। इसलिए सब लोग इस आशा में हैं कि जल्दी वह सब मालामाल जायेंगे।

भारत के देशवासियों का यह सपना सच्चा करने के लिए एक दो सुझाव आपकी सेवा में रखना चाहता हूं।

पहला सुझाव तो यह है कि आप लाटरी के टिकट खरीदना हर छोटे बड़े नेता के लिए 'कम्पलसरी' कर दें।

इसका फल यह होगा कि सबसे पहले नेताओं के सुन्दर सपने साकार हो जायेंगे। फिर वह जनता के सपनों की ओर अधिक ध्यान दे सकेंगे।

दूसरा सुझाव यह है कि नये वर्ष में लाटरी के टिकट की कीमत एक रुपये से घटा कर एक पैसा कर दी जाये। ऐसा करने से देश के सभी छोटे-बड़े नागरिक लाटरी के सौ-सौ टिकटों से भी ज्यादा खरीदेंगे। आपका सरकारी खजाना भरने लगेगा और देश तेजी से आगे बढ़ने लगेगा।

तीसरा सुझाव यह है कि लाटरी के इनामों में मास्को, लन्दन, न्यूयार्क का एक टिकट मुफ्त शामिल कर दीजिए। ऐसा करने से देशवासी सारी दुनिया को अपना घर समझने लगेंगे।

आपका
चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

जग रुठे रुठा करे
मत छोड़ो निज टेक,
कुत्ता पालो प्रेम से
काम करे वह नेक।
देवी जी का पर्स
उठा हाथ में,
चले साथ हर रोज
वह पार्क में ॥



आपके पत्र

**अपना कीमती समय नष्ट न कीजिये,
अपने दीवाने सुझाव हमें लिख भेजिये।**

दीवाना अंक १ व २, जनवरी ७६ के पढ़े, दिल खुशी से झूम उठा। दीवाना सुन्दर छपाई के लिए व मजेदार कहानियों के कारण लोकप्रिय होता जा रहा है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि दीवाना किसी विशेषांक के रूप में निकले। आशा है कि आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे।

—तसनीम अहमद खां, मुरादाबाद

आशा है जनवरी के महीने में ही आपकी इच्छा पूरी हो जायेगी। —सं०

दीवाना अंक ३ हस्तगत हुआ। मुख पृष्ठ पर रखे रुपयों को उठाने झपटा ही था कि मनोरंजन टैक्स की याद हो पड़ी। दीवाना पढ़ कर दिमाग में ताजगी का आभास होता है। पैरोडी 'गन्दगी और टयूगान' रोचक बन पड़ी है। 'आंखें-आंखें सबकी आंखें...' पढ़ कर हंसी आये बिना न रह सकी। मेरी नव वर्ष की शुभ कामनायें चिल्ली जी तक अवश्य पहुंचा देवें।

तरूण जैन—रिवाड़ी

अंक नं० २ पढ़ा। यह लिखने की तो जरूरत ही नहीं कि अंक कैसा लगा। क्योंकि मैं दीवाना चार वर्ष से नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूँ। मुझे इसके सभी स्तम्भ पसंद हैं। खास कर 'फैण्टम' मुझे बहुत अच्छा लगता है।

मैं आपसे एक अर्ज करना चाहता हूँ कि आप मुख्य पृष्ठ पर 'कृपया मांग कर न पढ़ें' जरूर लिखें। क्योंकि मुझे दीवाना मांगने वाले बहुत तंग करते हैं। **जसवन्त सिंह—'जटाना'**

आशा है मांग कर पढ़ने वालों ने भी यह पत्र पढ़ लिया होगा और अब वे मांगकर नहीं खरीदकर दीवाना पढ़ेंगे। —सं०

मैं 'दीवाना' का २ साल से नियमित पाठक हूं। मुझे अब इसमें कुछ कमियां नजर आ रही हैं। आजकल 'बन्द करो बकवास' तथा 'बोलते अक्षर' उतने रोचक नहीं लगते। इसे रोचक बनाने के लिए आप 'बन्द करो बकवास' में नये फिल्मों के गीत तथा 'बोलते अक्षर' समझने लायक दें तो अच्छा रहेगा।

अनिल कुमार—मनोहरपुर

दीवाना

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफ़र मार्ग,
नई दिल्ली-१

अंक: ४, [illegible] जनवरी ७६, वर्ष : [illegible]

चंदे की दरें—
छमाही : २५/- रु०
वार्षिक : ४८/- रु०
द्विवार्षिक : ६५/- रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद लघु कथाएँ लिख कर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर १० रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। [illegible]

नर्तकी

अंधेरी रात थी। बादल गरज रहे थे। शरीर को सुन्न कर देने वाली ठण्डी वायु चल रही थी। पानी निरन्तर बरसे जा रहा था। पहाड़ के बीच एक घना और भयावना जंगल था उस जंगल में युवक यात्री रास्ता भूल गया था। चित्रकला की रुचि उसे ऐसे मार्ग से जापान की राजधानी टोकियो की ओर खींचे लिए जा रही थी।

वह बहुत थक गया था। उसने इधर-उधर देखा कि कहीं झोंपड़ी आदि दृष्टिगोचर हो जाए, तो वह इस तूफान और भयानक जंगल से बचने का उपाय सोच सके। पर हर ओर निराशा अपना भयानक मुँह खोले खड़ी थी।

निराश यात्री ने पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ाना शुरू किया। मार्ग में कई स्थानों पर वह फिसला। कई जगहों पर नुकीले पत्थरों से उसने ठोकरें खाईं। कई बार वह गिरते हुए पेड़ों के नीचे आकर दबने से बचा। कई स्थानों पर वह कंटीली झाड़ियों में उलझा। पर उसने धीरज से काम लिया और साहस करके आगे बढ़ता ही गया।

वह पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया। वहाँ पहुंचकर उसने पुनः एक बार चारों ओर देखा। पर एक बार फिर उसे निराशा हुई। अभागे युवक को हर क्षण विश्वास होने लगा कि आज रात शायद उसके जीवन की अंतिम रात हो। उसके पश्चात् मृत्यु... बेबसी की मृत्यु।

उसने घुटने टेक दिए और प्रार्थना के लिए हाथ ऊपर उठाए। उसे कुछ शान्ति मिली। वह चुप था। एकाएक सब दिशाओं में मौन छा गया। तेज हवा रुक गई। उसके स्थान पर धीमी, सुगन्धित और शीतल वायु चलने लगी। वर्षा थम गई, बादल छँट गए और आकाश पर मनोहर चाँद स्पष्ट दिखाई देने लगा।

यात्री के हृदय में एक बार फिर आशा की किरण झलक गई। उसने सिर उठाकर नीचे घाटी की ओर देखा। दूर किसी झोंपड़ी में टिमटिमाते हुए दीपक का धीमा-धीमा प्रकाश उसे दृष्टिगोचर हुआ। उसका हृदय खुशी से उछलने लगा। वह अपने आप में एक नई शक्ति अनुभव करने लगा। वह उठा और दीपक की सीध में चल पड़ा।

युवक गिरता पड़ता झोंपड़ी के द्वार के निकट पहुंचा। उसने द्वार को खटखटाया। एक कोमल और मधुर आवाज आई—'कौन है?'

'मैं थका हुआ यात्री हूं। यदि कष्ट न हो तो किसी कोने में रात बिताने की आज्ञा चाहता हूं।'

उसी समय छोटी-सी खिड़की खुली। किसी ने यात्री की आकृति, अवस्था, सच्चाई का अनुमान लगाने के लिए बाहर झाँका। थोड़ी देर के बाद द्वार खोल दिया गया।

'अन्दर आ जाइए, आपका स्वागत है!' वह मन मोहक आवाज आई।

यात्री ने भीतर प्रवेश किया। वह देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि उसका स्वागत करने वाली एक पद्मिनी जैसी सुन्दरी थी।

युवक ने उसे प्रणाम किया।

'मैं यहां नितान्त अकेली हूं
केवल एक पलंग और बिस्तर है
पर विश्राम करें। मुझे किसी प्र
कष्ट नहीं होगा। वैसे भी मैं रात्रि
भाग जागकर काटती हूं। मैं आप
लिए भोजन बनाकर लाती हूं।'

यह कहकर वह चली गई। यु
चर्य चकित रह गया; ऐसी सुन्दरी
भयानक जंगल में और वह भी
इसमें क्या भेद की बात है? उसक
में कुछ नहीं आया। इतने में वह
के लिए खाना ले आई। वह खाना
भी यह सोचता रहा कि इस लड़
रहने में क्या भेद है। भोजन के प
उस सुन्दरी के आग्रह पर बिस्तर प
लेट गया। इतनी थकान के बाद
आ जानी चाहिए थी। पर आई न
इस समस्या को सुलझाने की चिन्त
अन्त में बहुत देर के पश्चात् उस प
छाने लगी। थकान अपना काम क
और वह सो गया।

कितनी देर तक वह निद्रामग्
यह नहीं कहा जा सकता। पर एक
सी ध्वनि से उसकी आँख खुल गई
कर पलँग पर बैठ गया। उसके
हो जाने के बाद एक पर्दा उसके
ओर लटका दिया गया था। ध्वनि
के पीछे से आ रही थी। इस विच
कहीं झोपड़ी में चोर तो नहीं घुस
उसने इधर-उधर देखा। फिर वह
ओर बढ़ा और उसने झोंपड़ो के द्



वेश किया। वहाँ पहुंचकर उसने एक
दृश्य देखा, जिसे देखकर वह आश्चर्य से
की तरह स्तर होकर खड़ा हो गया।
उसके सामने महात्मा बुद्ध की एक
थी। मूर्ति के पास एक आकर्षक नव-
का चित्र था। उन पर रंग-बिरंगे
ी फूलों के हार पड़े थे। वह सुन्दरी
ी सुध-बुध भूलकर उन दोनों के सामने
कर रही थी। वह नृत्य कर रही थी
यात्री उसका नृत्य देखने में लीन था...
अपनी सुध-बुध भूले हुए थे।

विस्मृति के इस वातावरण में मोहिनी
ी की दृष्टि यात्री के सम्मोहित चेहरे पर
। उसने नाचना बन्द कर दिया। पहले
सके सुन्दर मस्तक पर क्रोध के लक्षण
ई दिए। पर तत्काल ही उसके चेहरे
ुस्कराहट खेल गई।

'मैं अपनी इस नादानी के लिए आपसे
मांगती हूं। मैं बहुत लज्जित हूं कि
की नींद में बाधा डाली।'

युवक का जैसे एक मनोहर स्वप्न टूट
हो। वह चौंक पड़ा। उसने व्याकुलता
हा, 'मैं भी बहुत लज्जित हूं कि आपके
त्त में बाधा बनकर खड़ा हो गया।
ु क्षमा करें, आप तो एक बहुत अच्छी
ी हैं। आपके रहने के लिए यह झोंपड़ी
ी प्रकार से योग्य नहीं, फिर आप...'

'हां, मैं एक नर्तकी थी—सारे टोकियो
सिद्ध। महाराज और बड़े-बड़े साहूकारों
सभाओं में मैं नृत्य किया करती थी,
...'

वह रुक गई और उसका सिर किसी
त दुःख के भार से झुक गया।

युवक ने जरा नम्रता से पूछा, 'मगर?'

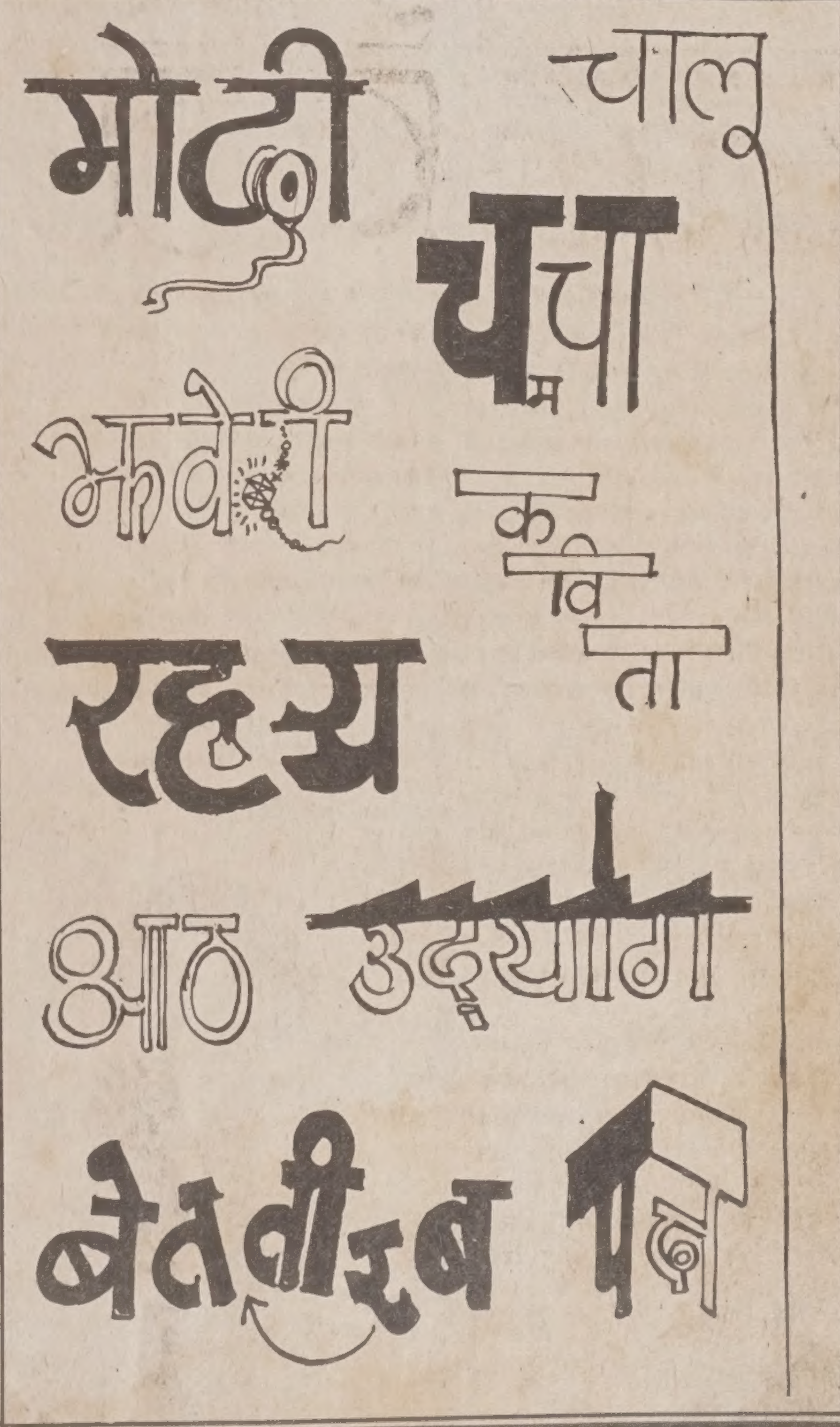
मोहिनी नर्तकी ने अश्रुओं में डूबी हुई
ों को ऊपर उठाया, 'आप मेरी कहानी
ा चाहते हैं। चलिए, दूसरे कमरे में।
मैं आपको अपनी कहानी सुनाऊंगी।'

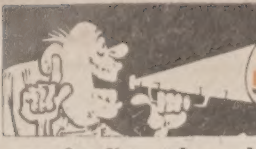
दोनों पलंग वाले कमरे की ओर बढ़े।
ह यात्री पलंग पर बैठ गया। सुन्दरी
ी दीवार का सहारा लेकर खड़ी हो
।

इसके बाद नर्तकी ने कहना शुरू किया
कोई दो वर्ष की बात है। टोकियो में
नृत्य की धूम मची हुई थी। सेठ और
कार मुझे अपनी सभाओं में बुलाकर गर्व
करते थे। एकाएक मेरे संसार में एक
ह ने प्रवेश किया। वह मेरे नृत्य पर
ा हो जाता था। उसने मेरे मकान पर
ा आरम्भ किया। यह हमारी मित्रता
आरम्भ था। धीरे-धीरे इस परिचय पर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

बोलते अक्षर





आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अमरजीत सिंह बूंगी—अबोहर : प्रेमियों की पहचान कैसे की जाती है ?

उ० : "चाक गरेबान और आल बदहवासी ।
अमावस में नजर आये पूरणमासी ।।"
यही मुख्य पहचान है प्रेमी जनों की ।

सतीश एबट—लुधियाना, पंजाब : चाचा जी शादी के बाद हर मनुष्य कुछ बदला-बदला नजर आने लगता है क्यों ?

उ० : आप तो जानते ही हैं कि शादी के बाद शादी के पहले वाले सपने टूट जाते हैं यानि कि हालत एक दम बदल जाती है । अब इस बदली हालत में अगर मनुष्य बदल जाये तो ताज्जुब ही क्या है ।

प्रभुदास रामटेके—नागपुर : प्रिय चाचा जी, आप इतने प्यारे क्यों लगते हैं ?

उ० : बात साफ है प्यारे कि हम प्यारे इसलिये लगते हैं कि हम खूबसूरत जो हैं । अब तो आपको कोई एतराज नहीं ।

रमेश कुमार देहलवी—नवाब गंज : एक गरीब मनुष्य के सामने अमीर कब झुकता है ?

उ० : इलेक्शन से पहले ये नाटक खुल्लम खुल्ला खेला जाता है और आजकल तो अमीर लोग गरीब इनकम टैक्स के बाबूओं के सामने कुछ ज्यादा ही झुक रहे हैं ।

कुमार हीरा प्रभाकर—सहरसा : दुनिया जब जलती है तब मजा क्यों आता है ?

उ० : क्योंकि ये दुनिया असल मानों में तो कुछ लोगों की जायदाद है—बाकी ज्यादातर लोग तो यहां किराये पर ही रहते हैं ।

एस० मन्जूर हसन—बीकानेर : अगर कोई भागी हुई लड़की आपके पास आ जाये तो ?

उ० : हम भी घर से भागे हुए रहते हैं । अब आप ही बताइये भला एक भागा हुआ दूसरे भागे हुए की क्या मदद कर सकता है ।

जसबीर एम खटकार—टाटा नगर : चाचा जान, हमारी चाची का क्या हाल है ?

उ० : वही टेढ़ी चाल है और वही लटकी खाल है ।

सनत नायक—रायगढ़ (म० प्र०) : चाचा जी, जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है और जब आदमी की मौत आती है तब वह किधर भागता है ?

उ० : ब्लैक के पैसे की ओर ।

शील के० शर्मा—किग्जवे कैम्प : चाचा जी, लोग कहते हैं—फूल आहिस्ता फेंको, फूल बड़े नाजुक होते हैं, पर गोभी का फूल फेंकने पर क्या अंजाम होगा ?

उ० : एक बार हमने घर में गोभी का फूल फेंका था और उसके बाद फेंके गये थे हम पर बेलन ।

प्र० : गरीब तो अपने खून-पसीने की कमाई खाता है, पर अमीर ?

उ० : आप भी कमाल कर रहे हैं—अमीर भी उन्हीं गरीबों के खून पसीने की कमाई खाता चला आ रहा है । अब जरूर कुछ रोक थाम करी जा रही है ।

चंद्रकांत खंडेलवाल—अकोला : चाचा जी, शाम को लाईट जगाने के बाद लोग लाईट को हाथ क्यों जोड़ते हैं ? क्या आप भी हाथ जोड़ते हैं ?

उ० : हमने हाथ जोड़ना बन्द कर दिया क्योंकि बिजली का बिल न देने की वजह से हमारी बिजली पक्के तौर से काट दी गई है ।

गुलशन पामर—मुक्तसर (पंजाब) : समाज में किस तरह रहना चाहिए ?

उ० : समाजवादी तरीके से ।

प्र० : क्या सैक्स ही हमारी फिल्मों का उद्देश्य है ?

उ० : 'सैक्स' नहीं बल्कि 'टैक्स' यानि कि पैसा कमाना हमारी फिल्मों का मुख्य उद्देश्य है । इन लोगों का नारा है—'सैक्स दिखाओ और टैक्स कमाओ' भाड़ में गये देश पर होने वाले बुरे असर ।

विजय राज हरीतवाल—तिनसुकिया : क्या बहुमत से उचित एवं वास्तविक अल्पमत को कुचला जा सकता है ?

उ० : बहुमत अव्वल तो अनुचित हो ही नहीं सकता और कभी अगर थोड़ी देर के लिये हो भी जाये तब भी प्रजातंत्रों के वसूलों के मुताबिक उसका आदर होना चाहिये ।

प्र० : आप हमारे प्रश्नों के उत्तर देने के अलावा और भी कोई धन्धा करते है या नहीं ?

उ० : करते क्यों नहीं हैं—और वो काम भी प्रश्नोत्तरों का ही है ।

शशि जैन—फिरोजपुर छावनी : प्यार की घंटी कब बजती है ?

उ० : जब सैन्डिलों का घंटा सर पर तड़ा-तड़ बज रहा हो या फिर प्रेमिका जब आपके घर की घंटी बजा रही हो ।

इरशार अहमद—पानीपत : दिल की आग कौन से पानी से बुझानी चाहिए कूएं के पानी से या तालाब के पानी से ?

उ० : अगर कुएं में छलांग लगाने से डर लगता हो तो तालाब ही ठीक है ।

प्र० : अंकल जी औरत का सबसे कीमती जेवर कौन सा होता है?

उ० : उसका पति क्योंकि वह सारी उम्र उसके लिए जेवर बनवाता रहता है ।

सुनील सागर—बिहार : चाचा जी, आप कितने बातूनी हैं ?

उ० : जनाब हम तो सिर्फ चार फुट साढ़े सोलह इंच के बातूनी हैं ।

इन्द्रपाल सिंह भाटिया—टाटानगर : सच्चे दोस्त की पहचान ?

उ० : आंखों में इज्जत और मुंह में मुस्कान और पान ।

प्र० : किसके आगे सिर झुकाना चाहिए ?

उ० : भगवान और नाई के आगे बाकी किसी के आगे नहीं ।

प्र० : आपकी अक्ल पर परदा पड़ जाये तो ?

उ० परदा तो बरखुरदार वर्षों से पड़ा हुआ है और इसी दीवाना पर्दे की वजह से उम्र काट रहे हैं ।

विज्ञापनबाजी

में नारी का उपयोग

आज जमाना विज्ञापनों का है और विज्ञापनों में क्या होता है ? किसी न किसी बहाने एक अदद लड़की मॉडल को आकर्षक मुद्रा में दिखाया जाता है । चाहे जिस वस्तु का विज्ञापन दिया जा रहा हो, उसका नारी जाति से सम्बन्ध हो या न हो । कोई कोण अथवा कोई ऐसा बहाना, चाहे वह कितना ही लाचार क्यों न हो, ढूंढ़ ही लिया जाता है, जिसके सहारे विज्ञापन में किसी सैक्सी पोज धारिणी को ठूंसा जाता है । इसी विषय पर आगे रिसर्च कर हम विज्ञापनदाताओं को कुछ और भी दीवाने आइडिये दे रहे हैं कि सैक्स को विज्ञापन में और ज्यादा कैसे समोया जा सकता है । विज्ञापित विषय वस्तु का, नारी शरीर से जबरदस्ती नाता कैसे जुड़वाया जा सकता है । तो पढ़िये हमारी खोपड़ी के कमाल !

आवश्यकता है

हमारी विशिष्ट इंजीनियरिंग कम्पनी को एक जनरल मैनेजर की

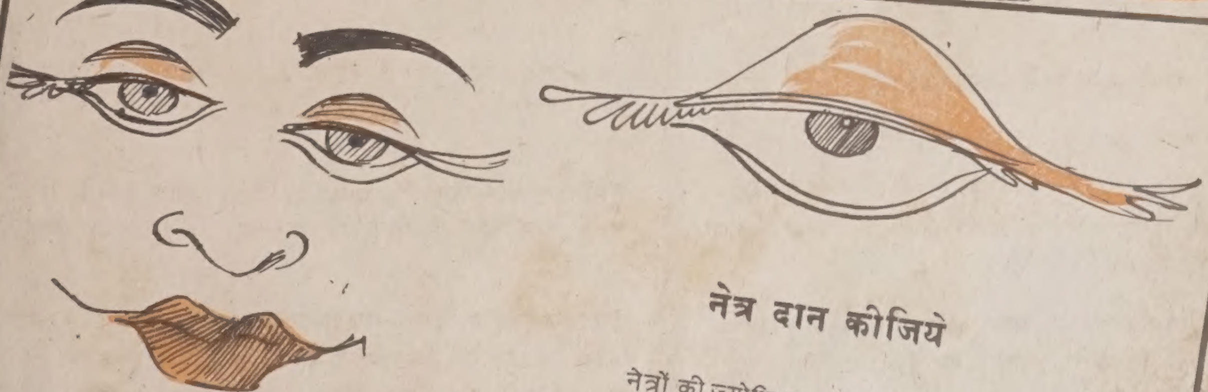
वेतन : ४०,००० रु० प्रतिवर्ष + सुविधायें

योग्यता : एम. काम. तथा मैनेजिंग का दस वर्ष का अनुभव आवश्यक है । आयु चालीस के आसपास ?

कार्य : कम्पनी का सारा भार संभालना होगा । कम्पनी की उसी प्रकार देख भाल करनी होगी जैसी देख भाल इस युवती ने अपने शरीर की की है ।

आवेदन पत्र भेजने का पता—पोस्ट बाक्स ४२०





नेत्र दान कीजिये

नेत्रों की ज्योति बुझती नहीं है । आपके मरने के बाद वह किसी दूसरे जरूरतमंद को दृष्टि प्रदान कर सकती है आपको मरने के बाद भी संतोष रहेगा कि मरने के बाद भी आपकी आंखें लड़कियों को घूरने का काम कर रही हैं ।

छोटी बचत योजनाओं में बचत करें



छोटी बचत मुसीबत के समय वैसे ही काम आयेगी जैसे बिकिनी सैंसर वालों के सामने काम आती है।

आयकर रिटर्न भेजने की अंतिम तारीख ३१-१२-७६ जल्दी कीजिये



अपने इनकम टैक्स रिटर्न में अपनी पूरी आय का ब्यौरा दें, कुछ मत छिपाइये। ईमानदारी से अपनी आय के (आंकड़े) फिगर बता अपने कर्तव्य का पालन कर वैसा ही संतोष अनुभव करें जैसे यह लड़की अपनी फिगर सबको दिखा कर अपूर्व संतोष व प्रसन्नता अनुभव कर रही है।

फंठूश आर्ट कालिज (प्राइवेट)

बी. ए, बी-कॉम, एम. ए, पी. एच. डी.
अनुभवी शिक्षकों से लैस



हमारे कालिज में आज ही भर्ती होकर उच्च शिक्षा की परीक्षायें पास करें। और बड़े अफसर बनें, तथा अपनी होने वाली सुन्दर बीवी को आधुनिक सुख सुविधायें प्रदान करें।
नया सत्र १५ जून से शुरू ?

अनुपम तीर्थ यात्रा

ऋषिकेश, हरिद्वार, केदारनाथ, गंगोतरी जमनोमी तीर्थ स्थलों के दर्शन कर परलोक सुधारिये। हमारी विशेष तीर्थ यात्रा स्पेशल लक्जरी बस द्वारा। तीर्थ यात्रा कार्यक्रम : भोजन खाने-पीने का प्रबन्ध हमारी ओर से। प्रस्थान : सुबह ६ बजे कश्मीरी गेटसे १२-२-१९७५ कुल खर्च केवल इतना ही जितना आप इस शिफॉन साड़ी पर खर्चते हैं (अर्थात : ६५० रु०)। टेलीफोन : १५७२९३ कार्यालय : चोर मंडी, बस स्टॉप के आगे ?





आज रात सतसंग

आज कम्यूनिटी हाल, चमेली नगर में श्री माता परम आनन्दी का जागरण, कीर्तन, सतसंग होगा। आप भी आकर भाग लें और पुण्य अर्जित करें।

(आपको पता ही है कि सतसंग के पुण्य से आप स्वर्ग जायेंगे। वहां अप्सरायें डांस दिखाती हैं और शराब की नदियां बहती हैं।)

सरकार द्वारा ऋण जारी

सरकार जनता से पांच करोड़ का ऋण ८½ प्रतिशत ब्याज पर ले रही है। ऋण ऐट-पार मूल्य पर लिये जायेंगे?

ऋण की अवधि
उतने ही वर्ष की है जितने इंच का अंतर इस सुन्दरी के वक्ष तथा कटि के नाप में है।

अर्थात
३८–२८=१०
अर्थात
दस वर्षीय ऋण होगा

ऋण स्टेट बैंक व रिजर्व बैंक द्वारा लिये जा रहे हैं। इच्छित राशि वसूल होते ही ऋण बन्द हो जायेगा।





निखट्टू कापी बुक व ज्योमेट्री बक्स

निखट्टू कापी बुक व ज्योमेट्री बक्स प्रयोग करने वाले बच्चे सदा फर्स्ट आते हैं। इनसे होती है लिखाई-पढ़ाई। बच्चे के फर्स्ट आने से उसकी मां खुशी से खिली-खिली रहती है, उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं।

आप भी अपने बच्चों को निखट्टू कापी बुक दें तथा उनकी मां को सुन्दर बनाये रखें।


जीवन बीमा
रोमान्टिक बुढ़ापा
सच मानिये आप अपने जीवन का मोटा सा बीमा कीजिये और बुढ़ापे में भी आप चाहें तो कम उम्र हसीन लड़की से इश्क फरमा सकते हैं। बीमे की रकम आपको बुढ़ापे में भी बचपन का आनन्द देगी।


खोया
मेरा पोर्ट फोलियो लाजपतनगर मार्केट के बस स्टाप पर २९-१-७६ को खो गया है। उसमें मेरा बी.ए. का सर्टिफिकेट कुछ लाइसैंस व बिजनैस सम्बन्धी कागजात हैं। उसी में मेरी गर्ल फ्रैंड का टेलीफोन नम्बर भी है। जो सज्जन मेरा बैग ला देंगे, उन्हें मैं अपनी गर्ल फ्रैंड का टेलीफोन नम्बर बतौर इनाम दूंगा।
सम्पर्क करें! क ख ग....


अहा-बेबी फूड
मैं अपने बच्चे को हमेशा अहा-बेबी फूड ही देती हूं। वह पूर्णतया स्वस्थ व खिलखिलाता रहता है, और खूब सोता है। इस प्रकार मुझे अपनी फिगर बनाये रखने वाले व्यायामों को करने का अवसर मिलता है।
यही है मेरी फिगर का राज
AHA
BAB

प्रेम का रंग चढ़ता गया। हमें एक दूसरे से एक क्षण का वियोग भी काटने लगता...हम ने माता पिता के विरोध पर भी विवाह कर लिया। एक वर्ष तक हम दोनों सारे संसार को भूलकर प्रसन्न चित्त रहे। पर...पर एक वर्ष के पश्चात्...' सन्ताप से उसकी आवाज बन्द हो गई।

'इसके बाद...' उसने कांपती आवाज में कहा, 'मृत्यु के निष्ठुर हाथों ने उसे मुझसे छीन लिया। वह मेरे नृत्य पर मरता था, इसलिए मैं अब भी हर रात्रि में उसके चित्र के सामने अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनकर नृत्य करती हूँ, ताकि उसकी आत्मा को खुशी प्राप्त हो; जिस तरह वह यहां मुझे नृत्य करता देखकर प्रसन्न होता था, उसी तरह वहां भी खुश हो।'

युवक प्रतिमा की तरह बैठा हुआ उस की यह दर्द-भरी कहानी सुन रहा था। समाप्ति पर उसकी आंखों से आंसू बह निकले। नर्तकी ने अश्रुओं को देखकर कहा, 'मुझे क्षमा करें। मैंने आपको बहुत दुःख पहुंचाया है।'

युवक चुप था और उसकी दृष्टि मोहिनी नर्तकी के विषादपूर्ण चेहरे पर जमी थी।

इस घटना को चालीस वर्ष का समय गुजर गया। चित्रकार अपनी मनोरम चित्र-शाला में बैठा किसी बड़े साहूकार का चित्र बनाने में लीन था। जापान में हर ओर उस की चित्रकला का चर्चा था। बड़े बड़े सेठ बहुत भारी दाम लेकर उसी से अपना चित्र बनवाते थे। टोकियो के सब प्रसिद्ध समाचार-पत्र उसकी चित्रकला का गुणगान करते थे... एक नौकर ने आकर सूचना दी, 'एक बुढ़िया कोई तीन चार दिन से यहाँ आती है और सरकार से मिलने की इच्छा प्रकट करती है। हम प्रतिदिन उसे टालते आ रहे थे। मगर आज यही उचित समझा कि आपको सूचना दे दी जाए। वह फटे-पुराने और मैले-कुचैले कपड़े पहने है। वह बहुत निर्धन मालूम होती है।'

चित्रकार ने अप्रसन्न होकर कहा, 'मैं तुम लोगों को इसलिए अपने द्वार पर खड़ा नहीं करता कि खूनी कुत्तों की तरह किसी गरीब को मेरे पास फटकने ही न दो। जाओ, उस गरीब बुढ़िया को एकदम मेरे पास लाओ।'

नौकर कुछ देर बाद बुढ़िया को लेकर लौट आया। चित्रकार ने बड़े आदरपूर्वक उसे आसन पर बिठाया और उससे आने का कारण पूछा। बुढ़िया ने उसकी कृपा दृष्टि के लिए उसका धन्यवाद किया और कहा :

'मैं अपना चित्र बनवाना चाहती हूं। अपने बुढ़ापे का नहीं यौवन का—उस समय का जब मैं एक अच्छी खासी सुन्दर थी।'

चित्रकार ने विस्मय से उसकी ओर देखा।

उस समय के यह वस्त्र मेरे पास रह गए हैं, जिन्हें पहनकर एक विशेष प्रकार से खड़े होकर मैं अपना चित्र खिचवाना चाहती हूं। उसके दाम देने को मेरे पास इन वस्त्रों के सिवा और कुछ नहीं। चित्र खिचवाने के बाद यही मैं आपको भेंट कर सकती हूं। यह पुराने समय के वस्त्र शायद आप एक अद्भूत वस्तु की तरह अपने पास रखना पसन्द करें।'

बुढ़िया ने वस्त्र निकाले।

चित्रकार ने विस्मय से पूछा, 'हैं आप ?'

बुढ़िया ने डरते हुए उत्तर दिया, 'जी, मैं।'

'क्या आपने मुझे पहचान लिया है ? क्या आप उस भूले भटके यात्री को भूल गई जिसने एक बार आपके पास एक रात्रि व्यतीत की थी ?' चित्रकार ने प्रश्न किया।

बुढ़िया ने कहा, 'प्रकृति ने मुझे ठीक ही मार्ग दिखाया है। मैं आप तक पहुंच गई हूं। आपने उस रात को मुझे नाचते हुए भी देखा था। उसी समय का और वैसा ही मेरा चित्र बना दीजिए।'

'हां अवश्य। आप अब कहां रहती हैं ?'

'मैं यह नहीं बताना चाहती। मेरे रहने का स्थान इस योग्य नहीं कि आपसे उसका वर्णन करूं।'

कुछ ही दिनों में चित्रकार ने उसकी इच्छा के अनुकूल चित्र बना दिया, अर्थात् उस समय का जब वह जवान थी। चित्र में चित्रकार ने उसे इतनी निपुणता से नृत्य की अवस्था में दिखाया कि चित्र से वास्तविकता का अनुमान होता था। यह उस चित्रकार का सबसे अच्छा चित्र था।

बुढ़िया ने चित्र लेकर चित्रकार का धन्यवाद किया और अपने वस्त्र उसे देने लगी।

'नहीं-नहीं, मैं नहीं लूंगा; इन्हें आप अपने पास रखें।'

'यह अब मेरे किसी काम के नहीं। एक प्राचीन अद्भुत वस्तु की तरह इन्हें रख लीजिये।' नर्तकी चली गई।

चित्रकार ने एक नौकर उसके पीछे भेजा कि चुपचाप उसके रहने का स्थान मालूम कर आए। नौकर ने आकर कहा कि नगर के बाहर भिखमंगों और फकीरों के मुहल्ले में एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में वह रहती है। चित्रकार ने दूसरे दिन घोड़ा-गाड़ी तैयार करने की आज्ञा दी। अपने साथ कुछ वस्त्र, उपहार और रुपये लेकर वह उसकी झोंपड़ी में पहुंचा—इस विचार से कि उसका शेष जीवन तो आराम से व्यतीत हो जाए।

झोंपड़ी में बिलकुल नीरवता छाई थी। आवाज देने पर जब किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो उसने अन्दर प्रवेश किया। महात्मा बुद्ध की मूर्ति और नवयुवक प्रेमी के चित्र के सामने चित्रकार द्वारा बना ताजा चित्र सुसज्जित था। बुढ़िया पलंग पर चिर-निद्रा में मग्न थी। अब वह बुढ़िया स्वयं को इस योग्य नहीं समझती थी कि अपने नृत्य द्वारा अपने प्रेमी की आत्मा को प्रसन्न कर सके। इसलिए वह अपने स्थान पर अपने प्रेमी की खुशी के लिए अपनी जवानी का चित्र छोड़ गई थी। ●

● सिनेमा के गेटकीपर के तौर पर एक आदमी नया नया नियुक्त हुआ। अगले दिन होली आ गई। मैनेजर ने सभी कर्मचारियों को बुलाकर समझाया कि, 'किसी भी व्यक्ति को हाल में पिचकारी लेकर नहीं जाने दो वरना वह थियेटर का कालीन और दीवारें खराब कर देगा। उसे कहो कि वह पिचकारी गेट पर ही छोड़ जाये।' यह सुनकर सभी अपनी-अपनी ड्यूटी पर वापिस चले गये। जो नया-नया गेटकीपर था उसने पहले ही दर्शक को धर दबाया—'आप अपनी पिचकारी गेट पर ही छोड़ जायें।'

'पर मेरे पास तो पिचकारी है ही नहीं।'

'मैनेजर का आदेश है बिना पिचकारी छोड़, आप अन्दर नहीं जा सकते। आपको घर जाकर अपनी पिचकारी लानी पड़ेगी।'

● अध्यापक ने एक बच्चे से पूछा—'तुमने आज कौन सा अच्छा काम किया ?'

'मैंने तथा मेरे चार दोस्तों ने मिलकर एक बूढ़ी औरत को सड़क पार करवाई।' बच्चे ने गर्व के साथ कहा।

'शाबाश ! लेकिन क्या एक औरत को सड़क पार कराने के लिए पांच लड़कों की जरूरत पड़ी ? अध्यापक ने हैरत से पूछा।

'जी, क्योंकि वह सड़क के पार जाना नहीं चाहती थी।' बच्चे ने मासूमियत के साथ उत्तर दिया।


फैण्टम और 'T' भाग-८
हत्यारों का पीछा करते हुए फैण्टम !
पुरानी जंगल की कहावत है कि "फैण्टम सख्त आदमियों के साथ सख्त है ।"
जैसे ही फैण्टम हत्यारों का पीछा करता है...
अब क्या करें ?
अब तो जहाज ही बचा सकता है ।
यह सब क्या हो रहा है ? ?
मोटर-साइकिल पर कोई जोकर बैठा दिख रहा है । हो सकता है कोई सिपाही हो ।
अब हम क्या करें ?
हैडक्वार्टर से पूछो... जल्दी करो ।
हत्यारे !
मुझे तुम्हारी ही तलाश थी।
ओह
उसने 'जो' को तो पकड़ लिया है, अब हम क्या करें ?
तैरते जाओ



चना कुरमुरा

● दो व्यक्ति शराब में धुत घर लौट रहे थे । जब एक घर का ताला खोलने लगा तो दूसरे ने कहा—'धत्त ! कहीं सिगरेट से भी ताला खुलेगा ?' दूसरे ने अपने हाथ में पकड़ी सिगरेट देखकर कहा—'अरे, अब तो मैंने सिगरेट की जगह चाबी जला कर पी डाली ।'

● मैनेजर—'मुझे इस पद के लिये जिम्मेदार व्यक्ति की जरूरत है ।'

उम्मीदवार (उत्सुकता से)—'तब तो आप बेखटके मेरी नियुक्ति इस पद पर कर दें । आज तक मैंने जहां काम किया कुछ न कुछ गड़बड़ी अवश्य हुई और प्रत्येक के लिये मुझे ही जिम्मेदार ठहराया गया ।'

● 'साहब एक चवन्नी का सवाल है ।'

गरीबदास ने पांच पैसे उसके हाथ में रख दिये ।

भिखारी ने कहा—'साहब, ये तो पांच पैसे हैं ।'

'तुमने कैसे पहचाना ।' गरीबदास ने पूछा ।

'टटोलकर ।' भिखारी बोला ।

'तो टटोलकर मुझे भी देख लो न कि मैं साहब हूं या और कोई ।' गरीबदास ने झुंझलाकर कहा ।

● युवक—पुरुष के जीवन में दो समय ऐसे होते हैं जब वह स्त्री को नहीं समझ पाता ।'

युवती—'अच्छा कौन-कौन से ?'

युवक—'शादी से पहले और शादी के बाद ।'

● प्रेमी—आज तो हमें पूरी तरह छुट्टी मनानी है । मैंने थियेटर में तीन टिकटों का प्रबन्ध कर लिया है ।'

प्रेमिका—लेकिन तीन टिकट क्यों ?'

प्रेमी—एक तुम्हारे पिता के लिए, दूसरा तुम्हारी माता के लिए, तीसरा तुम्हारे छोटे भाई के लिए ।

● 'किस आमदनी पर तुम मेरी बेटी को पालने की योजना बना रहे हो ?' ससुर ने अपनी लड़की के प्रेमी से पूछा ।

'दस हजार प्रति वर्ष,' उत्तर था ।

'अच्छा ! तो मैं जो हर वर्ष दस हजार लड़की को दूंगा...'

'उन्हें मैं जोड़ चुका हूं ।'

● एक प्रेम में पागल किन्तु शक्की नवयुवक किसी प्रेस में गया और वहां जाकर उसने बड़े सुन्दर पैड पर अपनी प्रेमिका का नाम और पता छपने का आर्डर दिया ।

'और कुछ ?' प्रेस मैनेजर ने पूछा ।

'हां, हर कागज पर 'मेरे प्रिय किशोर' और छाप देना ।'

● 'तुम्हें कैसे पता चला कि तुम मुझसे प्रेम करने लगे हो ?' नीरजा ने सतीश से पूछा ।

'जब मैंने पाया कि किसी के भी तुम्हें मूर्ख बताने पर मुझे गुस्सा चढ़ आता है ।'

● 'क्या तुमने अपने प्रेमी को बता दिया कि मैं उसे ठीक आदमी नहीं समझता ?' डाक्टर ने अपनी बेटी से पूछा ।

'हाँ, पिता जी,' बेटी ने कहा, 'इस पर वे बोले कि ये पहली बार नहीं है जब आपने गलत परीक्षण किया है ।'

● सुन्दर युवती चुपचाप खड़ी रही जब तक कैमिस्ट की दुकान पर बिल्कुल भीड़ न हो गई ।

दुकानदार ने उसके पास आकर पूछा, 'कहिए, आपको क्या चाहिए ?'

युवती ने कुछ पल ऊहापोह में बिता दिए । फिर शर्माते-शर्माते बोली, 'क्या आप मुझे मेरे मंगेतर का यह पत्र पढ़कर सुना सकेंगे ? वह डाक्टर हैं ।

अच्छे आदमी

उजागिर ने दोनों बडी केतलियों को ताजे चूल्हे पर चढाकर सामने—पूरब की ओर देखा। रात से ही 'अदरालछत्तर' (आर्द्रा नक्षत्र) चढा है। सूरज उगा है या नहीं,पता नहीं चलता। बादल हल्की पुरवैया के झोंके पर उमड़े आ रहे हैं।दूर फुहिया वर्षा में पेड की पातियां छिप रही हैं। सामने—खुला हुआ विशाल मैदान! हरियाली पर बिछी हुई—पिच रोड। नई सड़क!

उजागिर का घर, गांव के सबसे दक्षिण-छोर पर ऊंची जगह पर है। सामने बहुत दूर तक ढालू जमीन है। कोसी की मारी हुई जमीन कोसी की सूखी और बालू से भरी धारा तक, ऊबड़-खाबड़ है। कटिहार से जोगबनी तक पक्की सड़क पिछले साल ही बनकर तैयार हुई है—खुली है। जब, पहली बार कागजवाला नक्शा धरती पर अंकित हुआ, तो लगा कि उजागिर के घर तक आने के लिए ही सड़क इधर आई है। उजागिर के घर को छूकर फिर दाहिनी ओर मुड़ गई है।

उजागिर ने देखा···लेटी हुई धरती के गले में चन्द्रहार की तरह पड़ी—पिच रोड।

एक केतली का पानी गनगना उठा।

फिर दूसरी केतली का भी!



उजागिर की आंखों में 'प्रदीपकुमार की माय' के गले में पड़ी चन्द्रहार की झलक लगी।···आज प्रदीपकुमार की माय इतनी सुस्त क्यों है? केतलियों में चाय का पानी खौल रहा है। अभी तक न बेसन का गमला खनखनाया और न कड़ाही-कल्छी ही। आखिर बात क्या है?

उजागिर ने अपने तीन वर्ष के एकलौते बेटे को पुकारा, "क्या हो प्रदीप कुमार! बबुआ! माय से कहो, सादा गाड़ी के आने का समय हो गया। इधर, हमारे 'डिपाट' का सब काम 'फिनिस' है!'

अन्दर से कोई आवाज नहीं आई।

उजागिर ने अपने 'डिपाट' पर निगाह डाली। उजागिर का विभाग—चाय डिपाट-कप, तश्तरी, गिलास, छन्ना, चम्मच, चाय, दूध—सब। सब ठीक है। लेकिन, आखिर बात क्या है?

उजागिर का घर, इस इलाके का 'गैर-सरकारी बस पड़ाव' है। करीब बीस-पच्चीस गांव के लोग यहीं चढ़ते-उतरते हैं बसों में। दक्खिन, कटिहार से आने वाली बस अररिया कोर्ट से डेढ़ घंटे में और उत्तर जोगबनी-फारबिसगंज से चलने वाली गाड़ी को एक से सवा घंटे तक लग जाता है। इसलिए उजागिर के घर और दूकान के सामने दस-पन्द्रह मिनट रुकनी है।

इस 'लाइन' (सड़क) में उजागिर की दूकान के पकौड़े और चाय का खूब नाम हो गया है। सादा, खाकी और लाल गाडियों के ड्राइवर-कंडक्टर, पसिजर, क्लिनर, सभी तारीफ करते हैं।

प्रदीपकुमार की माय आई।

नहाई-धोई प्रदीपकुमार की माय को देखकर उजागिर का हलका जी और भी गुदगुदा उठा। गिलास में गर्म पानी डालते हुए वह मुस्कराया। प्रदीपकुमार की माय भी तनिक मुस्कराई। मानो, मन की बात को वह मन में अब नहीं रख सका। बोल पड़ा, 'अब रेडियो फिट कराना जरूरी है!'

कल तक उजागिर की समझ से, दूकान में एक दीवार घड़ी फिट करना जरूरी था। आज अचानक रेडियो की जरूरत सुनकर प्रदीपकुमार की माय को अचरज हुआ। वह अकचकाई।

उजागिर बोला, 'रेडियो में एक ही बात नहीं, तीन-तीन बात हैं। मन हो तो गाना सुनो, मन हो तो खबर सुनो और जानना हो तो टैम भी मालूम कर लो।'

प्रदीपकुमार की माय ने कड़ाही चढ़ा दी।

आंगन से आँखें मलता हुआ प्रदीपकुमार निकला। उजागिर ने प्यार से बुलाया, 'इधर आओ बाबू।··· बबुआ!'

हर रोज, पहला तीन गिलास··· सबसे पहले प्रदीपकुमार को, फिर प्रदीपकुमार की माय को और तब खुद!···प्रदीपकुमार दिन-भर में पांच गिलास चाय पीता है!

बसों में चढ़ने वाले 'कचहरिया-पसिंजर' एक-एक कर आने लगे। बैलगाड़ी पर कोई नई दुलहिन है क्या? सावन-भादों में नैहर जा रही है। यह सायकिल वाला आकर फिर तंग करेगा। यह सायकिल रखने की जिम्मेदारी अब उजागिर अपने ऊपर नहीं

(शेष पृष्ठ १६ पर)



मदहोश...



● एक अफीमची बस पर चढ़ते समय बोला—'मेरठ जाने वाला एक टिकट दीजिए।'

कण्डक्टर ने पूछा—लेकिन यह आपकी गोद में कौन है ? इनका टिकट भी...।'

'अरे, यह तो अपना मुन्ना है। अभी तो सिर्फ तीन साल का है। इसका टिकट क्या लेना है।'

'तीन साल ?' कण्डक्टर बोला—'यह छः फुटा लम्बू, दो मन की देह और एक हाथ की दाढ़ी...।'

अफीमची ने अपने साथी को जमीन पर पटक दिया और गुस्से से बोला—'मरवा दिया न ! मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि कम से कम हजामत तो बना लो।'

● 'तुम दो सरल प्रश्नों का उत्तर देना पसन्द करोगे या एक कठिन प्रश्न का।' अध्यापक ने एक विद्यार्थी से पूछा।

'एक कठिन प्रश्न का।' विद्यार्थी ने उत्तर दिया।

'तो बताओ पहले मुर्गी हुई या अण्डा ?' अध्यापक ने पूछा।

'अण्डा !' विद्यार्थी तपाक से बोला।

'कैसे ?'

'सर, आप तो यह दूसरा सवाल पूछ रहे हैं।' विद्यार्थी ने अध्यापक को याद दिलाया।

● रेल में मां ने बेटे से कहा—'चुपचाप बैठे रहो, शरारत की, तो मारूंगी।'

'तुमने मुझे मारा तो मैं टिकट चैकर को अपनी उम्र बता दूंगा।' बेटे ने धमकी दी।

● सबसे बड़ा नाम बताओ ?' अध्यापक ने पूछा।

'इस्माइल खां।' एक विद्यार्थी ने बताया।

'कैसे ?'

'इसमें 'इस' और 'खां' के बीच एक मील की दूरी जो है।'

● रामू ने मदारी को दस पैसे दिये।

मदारी ने कहा—'मेरे लिए ये दस पैसे नहीं, एक रुपया है।'

'अच्छा, तो फिर नब्बे पैसे वापस लौटा दो।' रामू ने सख्ती से कहा।

● अचानक पिता ने अपने लड़के से कहा—'देखो बेटा, शायद मकान मालिक आया है। उससे कह दो कि मैं घर पर नहीं हूं।'

'पर पिताजी आप तो कभी झूठ नहीं बोलते।' लड़का बोला।

'इसीलिए तो तुम्हें भेज रहा हूं।' पिता ने झुंझलाकर कहा।

● 'डन्ड-बैठक करके पढ़ाई क्यों करते हो बेटा ?' मम्मी ने पूछा।

'मास्टर जी ने कहा है कि मेहनत कर के पढ़ो।' बेटे ने उत्तर दिया।

● सहेली—'तुम शादी कब करोगी ?'

अभिनेत्री—अभी नहीं, क्योंकि पत्नी की भूमिका निभाते-निभाते मुझे पत्नी की स्थिति का ज्ञान हो गया है।'

एक युवती—'अरी ! वह खूबसूरत नौजवान तो मेरे पीछे पागल है।'

—'इसमें तुम्हारी क्या तारीफ ! वह तो पिछले कई सालों से पागल है।' दूसरी युवती जल-भुनकर बोली।

(पृष्ठ से आगे)

ले सकता। ताला लगाने पर भी नहीं।

पहली बोहनी की किसनपुर के बाबू ने, चार आने के पकौड़े और दो गिलास चाय। दूध-चीनी बराबर-बराबर, गिलास बढ़िया धोकर।

प्रदीपकुमार की मायने घूंघट के अन्दर से ही देखा—किसनपुर के बाबू की नजर उसकी कलाई से लेकर बांह तक गुदी हुई मछलियों पर है। कई जोड़ी मछलियां! चुलबुला रही हैं!

प्रदीपकुमार की माय ने बांह की मछलियों को आंचल खींचकर ढक लिया। किसनपूर के बाबू ने कहा, 'पकौड़े तनि और खरे-कुरमुरे'''।'

छनौटा में छने पकौड़ों को फिर से खौलते हुए तेल में डाल दिया प्रदीपकुमार की माय ने।

गीली पुरवैया के झोंके में पकौड़े की सोंधी-सलोनी सुगंध गांव में धीरे-धीरे फैलने लगी।

'''पकौड़े! चाह! चाय! चाह!

गांव का बूढ़ा संतोखीसिंघ रोज इसी समय आता है।'''रोज, 'नित्तम' दिन, टैम बंधा हुआ है, यही। यदि बोहनी नहीं हुई तो परम संतोषपूर्वक प्रतीक्षा करता है। बोहनी हुई कि उसकी चुटकी बजी, 'जै सिरि सित्ताराम?'

आज बोहनी होने के बाद भी संतोखीसिंघ की ओर ध्यान नहीं दिया उजागिर ने। संतोखीसिंघ ऐसे अवसरों पर कोई गप शुरू कर देता है। गप निश्चय ही किसी चोर-डकैती अथवा 'घरघुस्सी' की होगी। घरघुस्सी में पकड़े गए चोर को 'चमचोर' कहते हैं।

आज संतोखीसिंघ ने, पास के गांव में हुई चमचोरी में पकड़े गए किसी चमचोर की कहानी शुरू की।

संतोखीसिंघ को इस इलाके के सभी नामी-गरामी लोग जानते हैं। जातिवालों ने मिलकर संतोखीसिंघ को बहिष्कृत कर दिया है। 'जाति का हुक्का-पानी छूटे, मगर संतोखसिंघ उजागिर की दूकान की चाय और पकौड़े को नहीं छोड़ सकता और अब तो पकौड़े-चाय खा-पी कर ही वह सारा दिन रहता है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा। संतोखीसिंघ रिटायर्ड दफादार है। बहुत-बहुत 'इसपी' और दरोगा के मातहत काम कर चुका है वह। जब कहीं कोई नई घटना नहीं घटती है तब संतोखीसिंघ कोई पुरानी कहानी, बिना किसी प्रसंग के ही शुरू कर देता है।

किन्तु आज की कहानी, टटकी है, जो कल रात को ही घटी है।

किसनपुर के बाबू ने, हरी मिर्च की कड़ुवाहट पर 'सी-सी' करते हुए इस बात की पुष्टि की, 'हां, इसीलिए रात में उधर हल्ला-गुल्ला हो रहा था, क्यों? सी-सी!'

मामले को गांव के पंचों ने मिलकर 'रफा-दफा' कर दिया है, संतोखीसिंघ को यह खबर भी मिल चुकी है। मुद्दई, बेचारी मांगीसाह की वेवा क्या कर सकती है? पांच पंच की बात से बाहर कैसे जाए बेचारी!

प्रदीपकुमार की माय ने पकौड़ा नहीं दिया?

उजागिर ने चाय का गिलास बढ़ाते हुए कहा, 'संतोखी काका, पकौड़े गाड़ी जाने के बाद।'

'सो क्यों?' संतोखीसिंघ ने नकद पैसा देकर खाने वाले खरे गाहक की तरह खनखनाकर पूछा।

प्रदीपकुमार की माय ने घूंघट के अंदर से ही उजागिर को इशारे से कुछ कहा। केले के पत्ते पर गर्म पकौड़े लाकर सामने रख दिये उजागिर ने। इधर कई दिनों से संतोखीसिंघ इसी तरह तेवर चढ़ाकर बातें करने लगा है।

संतोखीसिंघ ने किसनपुर के बाबू से कहा, 'रासो बाबू, यह सड़क जब से चालू हुई है—चोरी-चुहाड़ी और भी बढ़ गई हैं। पहले तो गांव के आसपास के ही चोर-डकैत चोरी-डकैती करते थे। अब तो मनिहारी घाट का चोर जोगबनी आकर चोरी कर जाता है—रातोंरात—बेदाग!'

किसनपुर के बाबू ने विरोध किया, 'इसमें सड़क का क्या कसूर? बिना सड़क खुले ही कलकत्ता के लोग कटिहार में पाकिट मारते हैं।'

किसनपुर के बाबू को मालूम है, सड़क बनते समय इलाके में कई सड़क-विरोधी आंदोलन हुये थे। लोगों को उभारने के लिए आंदोलन के नेताओं ने इस बात को प्रमुख प्रचार-अस्त्र बनाया था—सड़क खुलते ही कलकतिया पाकिटमार से लेकर पटनिया ठग दिन-दहाड़े गांवों में घुसकर उतपात मचावेंगे।

किसनपुर के बाबू ने कलाई पर बंधी घड़ी देखी, फिर कान के पास लाकर सुना बस लेट है या घड़ी बंद है?

उजागिर बोला, 'दोनों तरफ की गाड़ी लेट हैं। रात में जोगबनी की ओर जोर की बरखा हुई है।'

संतोखी बोला, 'पूरब भी हुई है।'

उजागर को चोरी-डकैती की कहानी जरा भी नहीं अच्छी लगती। तिस पर आज चमचोरी का किस्सा!

उजागर ने चमचोरी प्रसंग को अच्छी तरह बदलने के लिए बात की छोर अपने हाथ में ले ली, 'पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन सब तरफ पानी बरसा है! सिर्फ अपने इलाके में''''''।'

संतोखीसिंघ ने बीच में ही काट दिया, 'अरे! इस इलाके में क्या पानी होगा! दिन-दहाड़े चमचोरी जहाँ होता है, वहां पानी बरसेगा। बज्जर गिरेगा—हड़हड़िया बज्जर!'

बादल सचमुच गरजा! प्रदीपकुमार की माय घूंघट के नीचे हंसी। 'बादल नहीं, बम की आवाज!'

प्रदीपकुमार की माय को पिछले साल की बरसात की बात याद आई। वर्षा में पकौड़े और चाय की बिक्री बढ़ जाती है। छाता धोती बंधक रखकर भी आदमी पकौड़ी खाकर चाय पीता है!

किसनपुर के बाबू ने थैले से, 'प्लास्टिक पेपर' के बड़े थैले से वाटर प्रूफ निकाला। मलेरिया-विभाग के दवा छिड़कने वाले से बहुत पैरवी के बाद यह बरसाती मिली है। झमाझम पानी पड़े पर कपड़े का एक सूत भी नहीं भीगता।

किसनपुर के बाबू ने उठते-उठते उजागिर को सलाह दी, 'इधर, चार हाथ और बढ़ाकर बैठने की जगह बनाकर छवा क्यों नहीं देते?'

प्रदीपकुमार की माय ने बांह के ऊपर साड़ी खींचकर उजागिर से कुछ कहा। किसनपुर के बाबू की आंखों में गुदी हुई मछलियां फिर चुलबुलाने लगीं।

उजागिर ने कहा, 'रासोबाबू! एक गाड़ी बांस के बिना सब काम रुका हुआ है। आपके दरबार में एक दिन 'इस्दुआ' लेकर!'

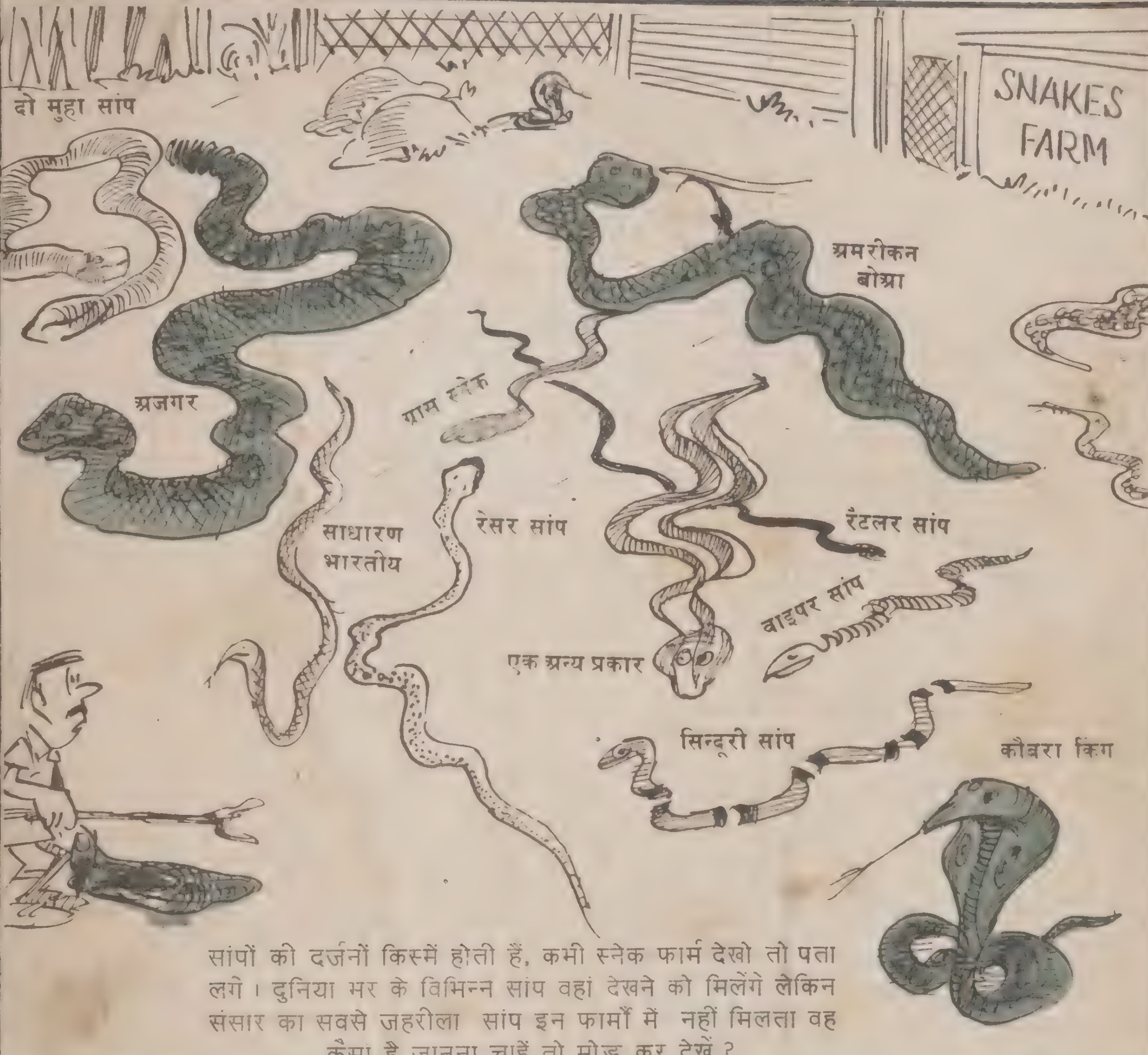
किसनपुर के बाबू ने देखा, घूंघट से एक जोड़ी आंखें भी कुछ कह रही हैं। बोले, 'अच्छी बात है। एक दिन आना। एक गाड़ी क्यों, दो गाड़ी बांस मिल जाएगा।'

उजागिर ने दांत निपोड़कर प्रदीपकुमार की माय की ओर देखा प्रदीपकुमार की माय ने आँखों से ही बातें कीं, 'मैंने कहा था न, रासोबाबू अच्छे आदमी हैं।'

संतोखीसिंघ बोला, 'एक गाड़ी घास क्यों नहीं मांगी तुमने! आज रासो बाबू का दिल 'दरियाव' हो गया है।'

वर्षा शुरू हुई। दोनों ओर से बस आई, एक ही साथ! '''पकौड़ी! चाय! पैसे। नये पैसे।

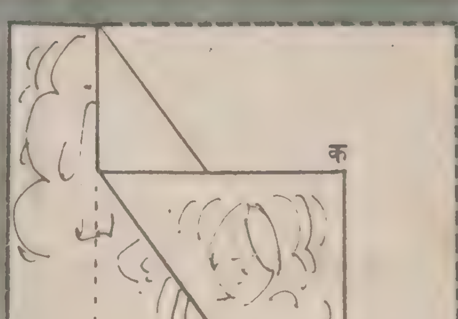
(शेष पृष्ठ १८ पर)



सांपों की दर्जनों किस्में होती हैं, कभी स्नेक फार्म देखो तो पता लगे। दुनिया भर के विभिन्न सांप वहां देखने को मिलेंगे लेकिन संसार का सबसे जहरीला सांप इन फार्मों में नहीं मिलता वह कैसा है जानना चाहें तो मोड़ कर देखें ?

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये

पहले क को ख से मिलाइये फिर ग पर वापिस मोड़िये और देखिये राज क्या है ?



(पृष्ठ १६ से आगे)

उजागिर को आज बात करने की फ़ुरसत नहीं।

'एक पत्तल पकौड़ी बिना मिर्च की।'

प्रदीपकुमार की माय ने घूंघट के नीचे से ही कुछ कहा। वह आज बिना मिर्च की पकौड़ी अलग से किसी गाहक के लिए नहीं बना सकेगी!

'लाल गाड़ी के ड्राइवरजी मांगते हैं!'

प्रदीपकुमार की माय बिना मिर्च वाला बेसन फेंटने लगी।

लाल गाड़ी का ड्राइवर अच्छा आदमी है। मनिहारी घाट में जहाज़ से उतरने वाले यात्रियों को भी वह उजागिर की दूकान की पकौड़ी और चाय की तारीफ सुनाकर फांस लाता है—'भाई, रास्ते में कहीं चाय पीना और पैसा फेंकना बराबर है। चाय, नाश्ता चलकर रहिकपुर में कीजिएगा। एक बार चक्खकर देखिएगा, तो फिर कभी नहीं भूलिएगा। गर्मागर्म चाय और कुरमुरे पकौड़े!'

लाल गाड़ी का ड्राइवर ऐसी जगह गाड़ी लगाता है, जहां से प्रदीपकुमार की माय की आँखें, तिरछी निगाह से देखने पर टकरा जाती हैं।

गाड़ी में बैठे हुए यात्रियों की नजर दूकान के सामने वाले हिस्से पर ही पड़ती है। जिधर प्रदीपकुमार की माय बैठती है उधर बाँस की 'झझरी' की टट्टी लगी हुई है—छोटी-सी, आड़ में बैठी हुई प्रदीपकुमार की माय का सिर्फ हाथ दिखलाई पड़ता है। पकौड़ी डालती हुई अंगुलियां! छनौटे से पकौड़े निकालकर बर्तन में रखते समय कांच की चूड़ियां मीठे सुर में बज उठती हैं।

उजागिर को इधर-उधर देखने की छुट्टी कहां?

गिलास, चीनी, पानी, पत्ती, चम्मच, पैसा, गाहक!

पत्तल पकौड़ी लेते समय एक बार वह प्रदीपकुमार की माय की ओर जरूर देख लेता है, 'देखिए भाई, हल्ला-गुल्ला नहीं। शांती से—शान्ति से!'

दोनों गाड़ियां आकर चली गई।

प्रदीपकुमार की माय उठकर अन्दर गई, उजागिर रेजगारियों का हिसाब करने लगा।

सतोखसिंघ को एक गिलास चाय चाहिए। जोरों की बारिश शुरू हुई।

उजागिर ने कहा, 'पानी गरम होने दीजिए।'

उजागिर ने लड़कपन से ही चाय बनाने का काम किया है।

कमलदह के जमींदार की ड्योढ़ी में हर काम के लिए अलग-अलग नौकर-चाकर थे—चाय बनानेवाला, चिलम सुलगानेवाला, तेलमालिश करनेवाला, भंग घोटनेवाला!

कमलदह के जमींदार की जमींदारी चली गई। लेकिन, उजागिर के हाथ का 'इलम' हाथ में ही रह गया। इसी 'इलम' ने उसकी मनोकामना पूरी की। घर में लक्ष्मी आई...!

रहिकपुर गांव की अपनी अपौती जमीन पर घर बनाकर एक 'रूपवाली' घरनी लाने की लालसा उसके मन में बचपन से ही घर बनाकर बैठी थी। कमलदह के छोटे बाबू की दुलहिन जैसी घरवाली मिल जाए, तो उजागिर सारी उम्र सिर्फ 'रूप' पीकर रह सकता है।

रूपवाली दुलहिन!

बालूवाली जमीन का कूप और गांव की लड़की का रूप—दोनों बराबर। बालूवाली जमीन के कूप का पानी 'कंचनठंडा' होता है। एक घूंट पी कर ही आत्मा जुड़ जाए। गांव की लड़की का रूप, एक बार निहारकर नींद आ जाती है, आंखों में। लेकिन बलुवाही कूप दो साल में ही 'बह' जाता है। गांव का रूप साल लौटते ही 'ढल' जाता है।

उजागिर ने भागलपुर, दरभंगा और पटना जैसे शहरों में घूम-घूम कर नौकरी की। कहीं रूप की झलक नहीं मिली। सब नकली—कच्ची कली कचनार जैसी ऊपर से।...इसको भला रूप कहते हैं?

शहर से वह रुपये की गठरी ले आया। मन की झोली उसकी खाली ही रही।

गांव के 'घटक-दलालों' ने उजागिर को ठगकर बहुत पैसा खाया बिरादरी के पंचों ने पान-सुपारी के नाम पर पचासों रुपये 'झीट' लिए—रूपवाली घरनी नहीं मिली।

किन्तु उजागिर निराश नहीं हुआ। कमलदह की छोटी दुलहिन ने एक दिन कहा था 'उजागिर, चाय पिलाकर तुम इन्द्रासन की परी को भी 'फुसला' कर मुट्ठी में कर सकते हो?'

उजागिर ने छोटी दुलहिन की बात याद की और एक दिन घर से निकल पड़ा—कहीं चाय की दूकान पर नौकरी भी मिल जाए, वह करने को तैयार है।

उजागिर उस (शुभ) दिन को कभी भूल नहीं सकता है भला?

कुरसेला स्टेशन पर उतर कर वह बहुत देर तक बैठा रहा।

खीरा खरीदकर खाते समय उसको बचपन के खेल की याद आई थी। बच्चे खीरे-ककड़ी के बीज को अंगुलियों में दबाकर कहते, 'फलान की शादी किधर होगी? बीज छिटकर जिस ओर गिरे—उधर ही। उसी दिशा में।'

उजागिर ने खीरे के एक बीज को अंगुलियों में दबाकर मन ही मन में कहा था, 'बीज जिस ओर छूटेगा, मेरी होनी वाली रूपवती दुलहिन उधर ही होगी।'

बीज उत्तर की ओर छिटका और बिना कुछ सोचे-विचारे वह कुरसेला से रानीगंज जाने वाली बस पर जा बैठा था।

कंडक्टर ने पूछा, 'कहां जाएगा?'

उजागिर क्या जवाब दे? न जाने यह गाड़ी कहां-कहां जाती है। तब तक बगल के यात्री ने बिरौली का टिकट मांगा और उजागिर ने भी बिरौली तक का टिकट कटा लिया।

गाड़ी बिरौली पहुंचकर पकौड़ीवाली सहुआइन की दूकान के सामने रुकी। बिरौली में उतरने वाले उतर गए। उजागिर बैठा रहा। बिरौली गांव में उतर कर वह क्या करेगा? वह आंखें मूंद कर कुछ सोच रहा था कि कंडक्टर ने उसको ठेलकर जागाया, 'ए बिरौली आ गया। उतरो।'

उजागिर ने अपनी झोली संभाली। अनिच्छा पूर्वक उतरा।

बस से उतरे हुए लोग पकौड़ीवाली दूकान पर थोड़ी देर रुके और जलपान करके चले गए। उजागिर चुपचाप बगल में एक मोढ़े पर बैठा रहा। बूढ़ी सहुआइन ने पकौड़ी की कढ़ाई उतार कर उजागिर से पूछा, 'कहां जाना है?'

उजागिर ने कुनमुनाकर जवाब दिया, 'कहीं नहीं। एक आने की पकौड़ी हमको भी चाहिए।'

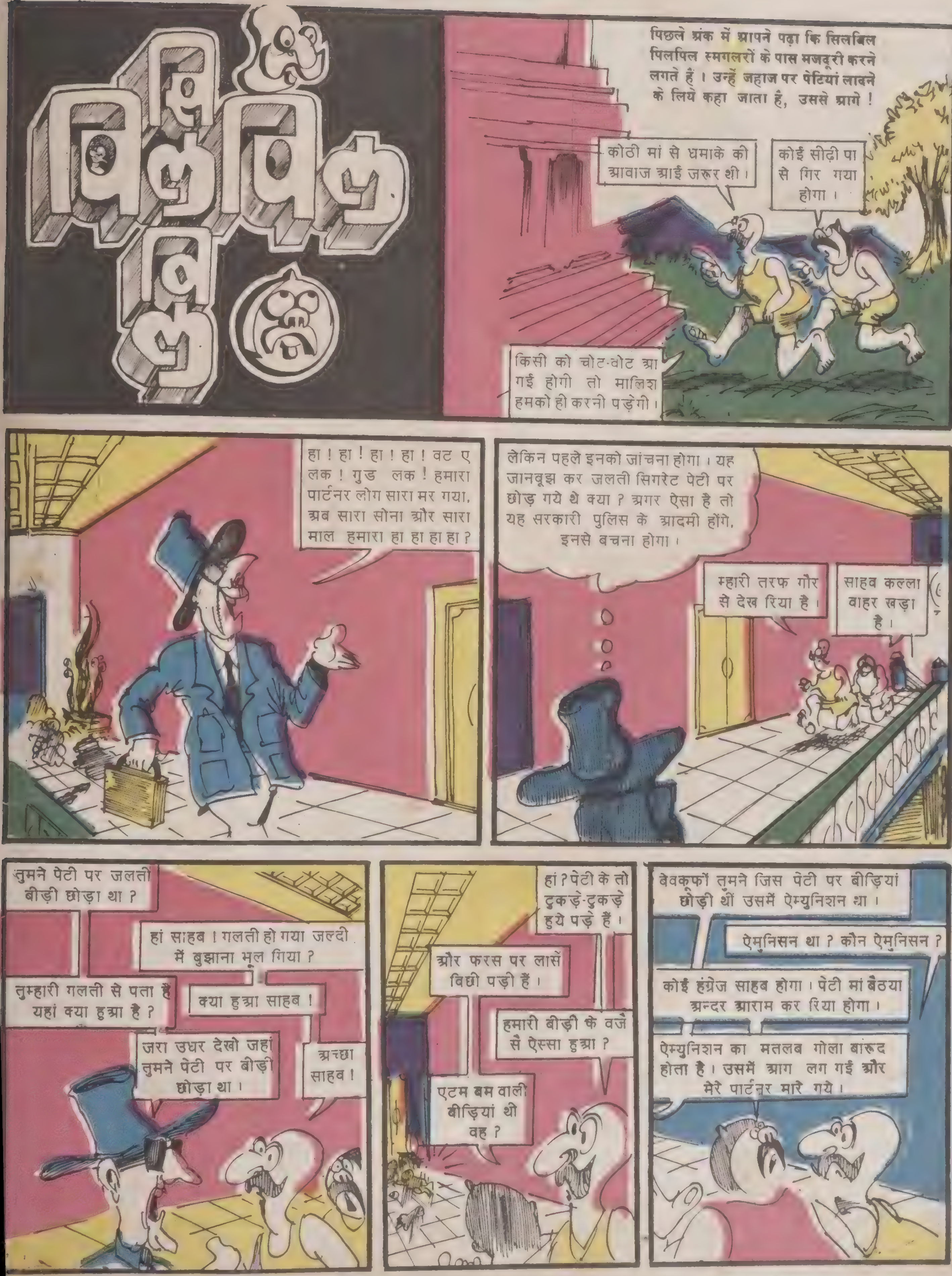
बूढ़ी झुँझलाई, 'इतनी देर से मुंह सीकर बैठे रहे। अब कड़ाही उतारने के बाद, एक आने की पकौड़ी! अब पकौड़ी नहीं, बैंगनी खाना है, तो बोलो चढ़ाऊं कड़ाही?...अरी ओ सितिया! कब तक बैठकर बैंगनी काटेगी! ऐं? दे जा जितना हुआ है। गाहक बैठा हुआ है यहां।'

झोंपड़े के अन्दर से उसी अंदाज से पतली आवाज में जवाब आया, 'कल से मैं कान-कुवड़ा बैंगन नहीं काटूंगी। एक-एक बैंगन में पांच-पांच पिल्लू!'

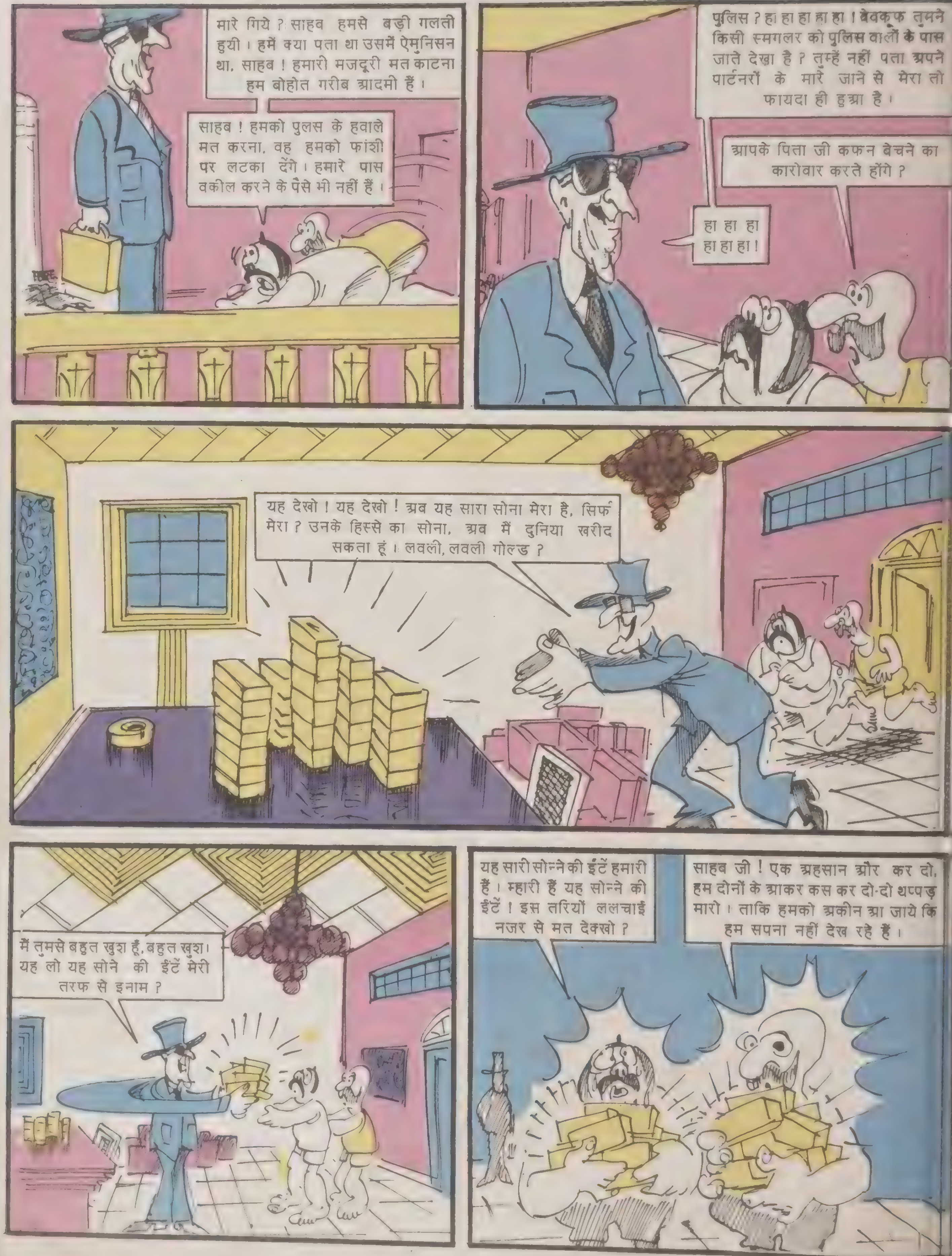
बूढ़ी ने सितिया नाम की लड़की को 'बैंगन लगाकर' एक भद्दी-सी गाली दी।

सितिया सूप में बैंगन के टुकड़े लेकर आई, 'मैं रोज तुमसे कहती हूं मौसी, परदेसी जातरी के सामने गाली मत बका करो।'

(शेष पृष्ठ ३१ पर)



सिलबिल पिलपिल
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल पिलपिल स्मगलरों के पास मजदूरी करने लगते हैं। उन्हें जहाज पर पेटियां लावने के लिये कहा जाता है, उससे आगे !
कोठी मां से धमाके की आवाज आई जरूर थी।
कोई सीढ़ी पा से गिर गया होगा।
किसी को चोट-वोट आ गई होगी तो मालिश हमको ही करनी पड़ेगी।
हा! हा! हा! हा! वट ए लक! गुड लक! हमारा पार्टनर लोग सारा मर गया, अब सारा सोना और सारा माल हमारा हा हा हा हा?
लेकिन पहले इनको जांचना होगा। यह जानबूझ कर जलती सिगरेट पेटी पर छोड़ गये थे क्या? अगर ऐसा है तो यह सरकारी पुलिस के आदमी होंगे, इनसे बचना होगा।
म्हारी तरफ गौर से देख रिया है।
साहब कल्ला बाहर खड़ा है।
तुमने पेटी पर जलती बीड़ी छोड़ा था?
हां साहब! गलती हो गया जल्दी में बुझाना भूल गिया?
तुम्हारी गलती से पता है यहां क्या हुआ है?
क्या हुआ साहब!
जरा उधर देखो जहां तुमने पेटी पर बीड़ी छोड़ा था।
अच्छा साहब!
हां? पेटी के तो टुकड़े-टुकड़े हुये पड़े हैं।
और फरस पर लासें बिछी पड़ी हैं।
हमारी बीड़ी के वजे से ऐस्सा हुआ?
एटम बम वाली बीड़ियां थी वह?
बेवकूफों तुमने जिस पेटी पर बीड़ियां छोड़ी थीं उसमें ऐम्युनिशन था।
ऐमुनिसन था? कौन ऐमुनिसन?
कोई हंग्रेज साहब होगा। पेटी मां बैठया अन्दर आराम कर रिया होगा।
ऐम्युनिशन का मतलब गोला बारूद होता है। उसमें आग लग गई और मेरे पार्टनर मारे गये।


मारे गिये ? साहब हमसे बड़ी गलती हुयी । हमें क्या पता था उसमें ऐमुनिसन था, साहब ! हमारी मजदूरी मत काटना हम बोहोत गरीब ग्रादमी हैं ।
साहब ! हमको पुलस के हवाले मत करना, वह हमको फांशी पर लटका देंगे । हमारे पास वकील करने के पैसे भी नहीं हैं ।
पुलिस ? हा हा हा हा हा ! बेवकूफ तुमने किसी स्मगलर को पुलिस वालों के पास जाते देखा है ? तुम्हें नहीं पता ग्रपने पार्टनरों के मारे जाने से मेरा तो फायदा ही हुग्रा है ।
हा हा हा हा हा हा !
ग्रापके पिता जी कफन बेचने का कारोबार करते होंगे ?
यह देखो ! यह देखो ! ग्रब यह सारा सोना मेरा है, सिर्फ मेरा ? उनके हिस्से का सोना, ग्रब मैं दुनिया खरीद सकता हूं । लवली, लवली गोल्ड ?
मैं तुमसे बहुत खुश हूँ, बहुत खुश। यह लो यह सोने की ईंटें मेरी तरफ से इनाम ?
यह सारी सोन्ने की ईंटें हमारी हैं । म्हारी हैं यह सोन्ने की ईंटें ! इस तरियों ललचाई नजर से मत देक्खो ?
साहब जी ! एक ग्रहसान ग्रौर कर दो, हम दोनों के ग्राकर कस कर दो-दो थप्पड़ मारो । ताकि हमको ग्रकीन ग्रा जाये कि हम सपना नहीं देख रहे हैं ।


साहब जी हम आपका अहसान मरते दम तक नहीं भूलेंगे। हमारे बाल बच्चे भी सुबह शाम 'ओउम् जय जगदीश' की बजाये आपकी आरती गायेंगे. हम अपने ड्रिराइंग रूम में आपकी बड़ी फोटू लगायेंगे। समझ में नहीं आता कि किन-किन सबदों में आपका धनवाद करें ?
ओ डोंट वरी ! डोंट वरी मैन ! इट इज रियल्ली नॉट निसेसरी ? डोंट वरी ! हम तुमसे बहुत खुश है ?
अरे अरे, अरे !
देख ! देख ! ईंटें गिर रही हैं ?
CRUSH
यू बास्टर्ड ! यू हैव ब्रोकन माई पुअर फुट ! मेरा पैर तोड़ दिया. हमारा पैर ?
कर दिया न कबाड़ा ? इब यह साहब गुस्से मां हमसे यह सारा सोन्ना छीन लेगा। मेरे यार तू मरवायेगा मुझे !
मने जानबूझ के थोड़े ही गेरया से ? अपने आप गिर गिया !
साहब बोहोत चोट लगी है? आपको अभी डेटाल डालता हूं।
च च च च ! बहुत चोट लगी है कीमा बन गिया है पैर का ? साहब, जरा धीरज धरो अच्छे साहब रोया नहीं करते। मैं अभी दौड़ कर सहर जाता हूँ,वहां से डागधर को बुला के लाऊंगा।
और पिलपिल का पैर डगमगा जाता है हड़बड़ी में ?
ओह! ओह!
और हाथ में उठाई सोने की ईंटों का बैलेंस खराब"!



सिलबिल पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढिए ।

कर्नल बिनोद ने दबी जबान से पुकार कर कहा, 'जरा होशियारी से हमीद।' सहसा एक गीदड़ उनके सामने से गुजरा तो हमीद उछलकर कर्नल से लिपट गया।

'यह क्या बदतमीजी है ?' कर्नल ने खीझ कर कहा।

'मुझे डर लग रहा है।' हमीद ने जनाना आवाज में कहा।

'बको मत।' कर्नल ने डाँटा, सीधे चले चलो। यह वक्त हरकतें करने का नहीं। जरा भी तुम्हारी आवाज कहीं उस जवान ने सुन ली तो गोली तुम्हारे जिगर के पार होगी।

'तुमसे खुदा समझेगा उस्ताद !' हमीद ने उसे कोसा, अगर मैं मर गया तो दफन के दिन···अरे नहीं बाबा तुम तो जाओगे अपने नरक···मेरा मतलब है, स्वर्ग में और मैं···।

ओहो ! अब चुप भी रहो। कर्नल ने घुटी आवाज में कहा, 'तुम अपने साथ मुझे भी मरवाओगे।'

इधर-उधर की ठोकरें खाते दोनों उस सुरंग तक पहुंच गये। कर्नल ने कहा, जरा होशियार। एक अनाड़ी हत्यारे से हमारा वास्ता पड़ने वाला है। हमीद ने कहा, अजीब बात है ? हम तो वक्त पर पहुंच गये मगर हमारे मेजबान का पता ही नहीं कहीं ?

'घबराओ नहीं, वह खास तैयारी के साथ आएगा।'

तुम्हारा क्या ख्याल है, उसने हमें मारने की क्या तजवीज़ सोची होगी ?

'क्या कहा जा सकता है ?' हो सकता है कहीं से गोली दाग दे ?

'बाप रे···फिर तो भैय्या तुम मेरे आगे चलो।'

··· रेर ··· ौर खड़े ···

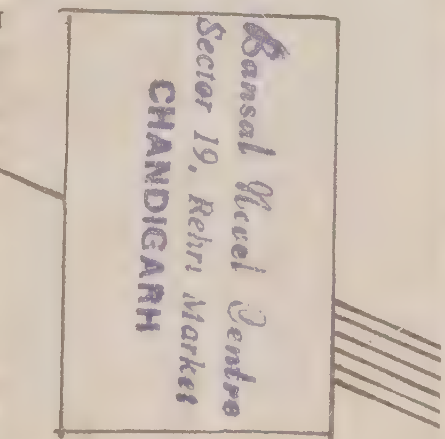
ही कि··· गया हो··· है। स··· का क··· तो न··· हो··· पीछ··· तक··· अन··· जा··· बै··· कं··· में··· तं··· अ··· दे··· दे··· फ··· मैं··· च··· के··· आ···

मनोरंजन स्ट्रीट

खेल-तमाशे जादू-पहेलियाँ आदि का तिलिस्म

नजरों का धोखा

गौर से देख कर बताइये कि दायीं ओर वाली तिरछी लायनों में से कौन सी बायीं ओर निकली है। फिर अपना सन्देह अंगूठा रख कर दूर करें।



अंक २ ८ जनवरी ७६ में प्रकाशित मनोरंजन स्ट्रीट के सही हल

	म				
घ	र	स	क	र	स
	ते			ज	
	०			नी	
प्रि	मा		सौं	गं	च
	स			ध	

विजेता कोई नहीं

कागज के खेल
सुन्दर बक्स बनाना
विजेता :— अनिल कुमार महाजन
1551/2A, वेस्ट रोहतास नगर
गली नं० 1 शाहदरा
110032

2 —— —— —— ——

3 —— —— —— ——

4 घर वाली

ऊपर नौकरानी शब्द दिया गया है। इसे चार चरणों में घर वाली बनाइये। (वास्तव में भी नौकरानियां मालिक से शादी कर घरवाली बन बैठती हैं) प्रत्येक चरण में एक अक्षर बदलना है। नये बने अक्षर सार्थक होने चाहियें।

···ना कुरमुर

● मेहमान—'क्यों बेटे, तुम्हारी उम्र कितनी है ?'

'जी, घर में १५ वर्ष, स्कूल में ६ वर्ष तथा बस में ७ वर्ष।'

● तुम बहुत पढ़ोगे।' ज्योतिषी ने हाथ देखकर कहा।

'पढ़ तो चार बरसों से रहा हूं।' बबलू बोला—'कृपया यह बतायें कि पास कब होऊंगा।'

● 'आपरेशन करते समय सर्जन अपना चेहरा ढके क्यों रहते हैं ?' प्रशिक्षण के लिए आई नर्सों ने पूछा।

'ताकि यदि आपरेशन में कोई गड़बड़ हो जाए तो मरीज यह न जान पायें कि किस डाक्टर ने आपरेशन किया है।' एक नर्स ने उत्तर दिया।

● डाक्टर (बच्चे से)—'देखो, तुम्हें बिल्कुल बुखार नहीं है।'

'वो तो ठीक है डाक्टर साहब, पर नौ बजे मुझे जरूर बुखार आयेगा।'

'वो कैसे ?'

'क्योंकि मेरा स्कूल नौ बजे खुलता है।' बच्चे ने उत्तर दिया।

● 'दादी जी, आप बादाम खाती हैं क्या ?' बंटी ने पूछा।

'नहीं बेटा, मेरे सारे दांत गिर गये हैं।'

'तब ठीक है, ये बादाम रख लीजिए, मैं स्कूल से लौटने पर ले लूंगा।' बंटी ने निश्चित होकर कहा।

● तुम्हें युद्ध क्यों नहीं अच्छा लगता ?' अध्यापक ने पूछा।

'क्योंकि युद्ध से इतिहास बनता है और वह हमें रटना पड़ता है।' एक विद्यार्थी ने दबे स्वर में कहा।

● 'बताओ दुनिया में सबसे बड़ा कौन है ?'

'फिल्मी ऐक्टर।'

'कैसे ?'

'वह जो चाहे बन सकता है।'

● शिक्षक—'बबलू, तुमने अपने एक कान में उंगली क्यों डाल रखी है ?'

बबलू—'ताकि आपकी बात दूसरे कान से निकल न जाए।'

● 'कमला, तुम्हारी नौकरानी इतनी सुबह कैसे जाग जाती है ?' पड़ोसिन ने पूछा।

'ओह, यह तो एकदम सरल था।' कमला ने बताया, 'मैंने उसका परिचय सुबह दूध वाले से करा दिया। अब वह दूध वाले के आने के समय तक उठकर तैयार हो जाती है।'

'अभी कुछ नहीं ।' कर्नल ने कहा, 'मैंने अनजाने जालिम खां की उंगलियों के निशान ले लिये हैं। इन्सपेक्टर चौहान ने उनके फोटो निकलवा लिए होंगे ?'

'सुरक्षा ।'

'शहाब से मिले ?'

'नहीं ।' जब मैं होटल में गया तो वह नहीं था ।

'क्या अब भी उसकी निगरानी जरूरी है ?'

'हाँ ! उसका व्यक्तित्व अब भी रहस्य मय है ।' समझ में नहीं आ रहा कि काहिरा के करोड़पति का सलीम से क्या वास्ता ? तुम कहते हो कि वह दोपहर को फर्जाना रेहाना से भी मिला था ?

'हां, मगर बहुत थोड़ी देर के लिए ।'

कर्नल कुछ कहना ही चाहता था कि





नया धारावाहिक उपन्यास भाग-५

क़ातिल?

झन...न की आवाज हुई और पीछे की खिड़की का शीशा टूट कर बिखर गया और कोई भारी चीज टप से नीचे आ गिरी। कर्नल बिजली की तेजी से उठा और खिड़की के पास गया। एक पत्थर के साथ उसे एक कागज लिपटा दिखाई दिया। उसने उसे उठाया और खोलकर पढ़ा। लिखा था—'अगर आप खालिद के हत्यारे का नाम जानना चाहते हैं तो आज रात आठ बजे तुगलकाबाद के खण्डर में सुरंग के पास दोनों मिलो।'

नीचे किसी के हस्ताक्षर न थे। कर्नल ने मुस्कराकर पर्चा हमीद को दे दिया। पढ़ कर उसकी आँखें और मुँह गोल हो गये। उसने अजीब अन्दाज में कहा, 'यह क्या है उस्ताद ?'

'हम दोनों को फाँसने का जाल ।'

'नहीं...।' हमीद ने कहा, 'काले चोर के अब तक के काम तो बड़े अच्छे रहे ?'

'मगर यह तो किसी की बेहदी हरकत है ?' कर्नल ने कहा, 'यह तो किसी निराश व्यक्ति की तुरुप है ?'

'ओह...तो तुम इसे जालिम खां हरकत समझते हो ?'

'यकीनन...।' रेहाना से निराश होकर उसने हम दोनों की जान लेने की ठान ली है।

'मगर मुझ पर उसकी यह मेहरबानी क्यों ?'

'क्योंकि तुम मेरे साथी हो ?'

'बाप रे...अगर ऐसा है तो कल ही मेरा इस्तीफा लीजिये...।'

'मगर जाना तो आज है प्यारे ।'

'फिक्र मत करो प्यारे ! संसार में आशिकों की कमी नहीं।' तुम निश्चित होकर मरो। चिन्ता न करो अगर तुम्हें जालिम ने मार डाला तो मैं उससे तुम्हारी जान का बदला जरूर लूंगा।

'उससे मुझे क्या मिलेगा ।'

'तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिलेगी ।'

कर्नल विनोद ने वह कागज फिर खोला। उस पर उंगलियों का कोई निशान न था। कर्नल समझ गया कि ... पहन कर लिखा गया है। उसने ... पर पाउडर



कर... ठीक ही निक... जालिम ही फेंका है।

'फिर ? क्या करना है ?'

'यही...कि रात आठ बजे च... बुलावा जो आया है ?'

'तो तुम ही जाना। अपन तो भ... के अकेले इकलौते हैं।'

'अरे...इसमें डरने की क्या बात...'

'डर यही है कि पिस्तौल की... खाकर मरना पड़ेगा।'

'अच्छा ! अब बकवास बन्द ...' कर्नल ने उकता कर कहा, 'आज रात वहाँ जरूर आना है।'

'जी बहुत अच्छा !' हमीद ने म... आवाज में कहा।

रात घनी अन्धेरी थी। तुगल... किले के खंडरात अन्धेरे में छुपे हुए

कर्नल विनोद ने दबी जबान से पुकार कर कहा, 'जरा होशियारी से हमीद।' सहसा एक गीदड़ उनके सामने से गुजरा तो हमीद उछलकर कर्नल से लिपट गया।

'यह क्या बदतमीजी है ?' कर्नल ने खीझ कर कहा।

'मुझे डर लग रहा है।' हमीद ने जनाना आवाज में कहा।

'बको मत।' कर्नल ने डाँटा, सीधे चले चलो। यह वक्त हरकतें करने का नहीं। जरा भी तुम्हारी आवाज कहीं उस जवान ने सुन ली तो गोली तुम्हारे जिगर के पार होगी।

'तुमसे खुदा समझेगा उस्ताद !' हमीद ने उसे कोसा, अगर मैं मर गया तो दफन के दिन···अरे नहीं बाबा तुम तो जाओगे अपने नरक···मेरा मतलब है, स्वर्ग में और मैं···।

ओहो ! अब चुप भी रहो। कर्नल ने घुटी आवाज में कहा, 'तुम अपने साथ मुझे भी मरवाओगे।'

इधर-उधर की ठोकरें खाते दोनों उस सुरंग तक पहुंच गये। कर्नल ने कहा, जरा होशियार। एक अनाड़ी हत्यारे से हमारा वास्ता पड़ने वाला है। हमीद ने कहा, अजीब बात है ? हम तो वक्त पर पहुंच गये मगर हमारे मेजबान का पता ही नहीं कहीं ?

'घबराओ नहीं, वह खास तैयारी के साथ आएगा।'

तुम्हारा क्या ख्याल है, उसने हमें मारने की क्या तजवीज सोची होगी ?

'क्या कहा जा सकता है ?' हो सकता है कहीं से गोली दाग दे ?

'बाप रे···फिर तो भैय्या तुम मेरे आगे आगे चलो।'

थोड़ी देर और खड़े रहकर कैप्टन ने उकताकर टार्च की रोशनी इधर-उधर फेंकी तो कर्नल ने फौरन उसका हाथ पकड़कर कहा, 'यह क्या करते हो ? क्या सचमुच मरना चाहते हो ?'

हमीद के हाथों से छूटकर टार्च नीचे गिर पड़ी। कर्नल उसे उठाने के लिए झुका तो चौंककर उसने कहा, 'यह देखो···खून के धब्बे···ताजा खून के।'

'मर गये···।' कैप्टन ने कहा और नीचे झुक कर फिर रोशनी की। ढेर सा ताजा खून बिखरा था और संघर्ष करने के चिह्न भी स्पष्ट थे। दोनों ने एक दूसरे को प्रश्न-वाचक दृष्टि से देखा। कर्नल ने कहा लगता है अभी-अभी यहां दो आदमियों में लड़ाई हुई जिसमें···। एक का कबाड़ा हो गया ? कैप्टन ने उसका वाक्य पूरा किया।

यह भी हो सकता है कि जालिम खाँ ही किसी जंगली जानवर का शिकार हो गया हो ? कैप्टन ने कहा।

कर्नल ने कहा, लगता तो कुछ ऐसा ही है। साढ़े आठ हो गये मगर अभी तक उस का कहीं पता नहीं। कहीं उसे काला चोर तो नहीं मिल गया ? खुदा करे ऐसा हुआ हो···कैप्टन ने कहा फिर उन्होंने उस खून का पीछा किया। खून के धब्बे सुरंग के अन्दर तक चले गये थे। कर्नल ने कहा, आओ अन्दर चलें···।

न बाबा ! मैं तो मौत के मुंह में न जाऊंगा। कहीं वह जालिम हमारी घात में बैठा हो तो ? या कोई भूत बूत···।

भूत इतने मूर्ख नहीं होते जो तुम जैसे कायरों को दबोचें, कर्नल ने आदेश ने स्वर में कहा, आओ चलें।

आज तुम मेरी कीमती जान गंवाकर ही मानोगे, कैप्टन ने कहा।

कर्नल बोला, आगे आगे तो मैं हूं ?

यही तो डर मुझे खाए जा रहा है। अगर किसी ने पीछे से मुझे धर दबोचा तो, दोनों टार्च की रोशनी में खून के धब्बों को देखते सुरंग में प्रवेश कर गये। सुरंग टूटी फूटी थी, मगर रास्ता साफ था। अन्दर सीलन की गंध फैली हुई थी कोई सौ गज चलने के बाद एक मोड़ आया। वहां खून के धब्बे दीवारों पर भी लगे थे खून के धब्बे आगे बढ़ते जा रहे थे।

कैप्टन ने कहा, जाने कहां तक बेचारे मकतूल को वह जालिम घसीट ले गया होगा ?

खमोश···कर्नल ने कहा, जरा होशियार होकर चलो। पचास गज और चलने पर सुरंग एक लम्बे चौड़े कमरे में बदल गई। कर्नल ने उस कमरे में चारों ओर रोशनी डाली और कुछ चीजें बिखरी देखकर कहा, 'जान पड़ता है पड़ौसी बस्तियों के लोग यहाँ आते जाते रहते हैं।'

फिर वह जैसे ही कमरे के बीचों-बीच पहुंचे कैप्टन हमीद चीख पड़ा। और कर्नल ने महसूस किया जैसे उसके पैरों तले से धरती खिसकती जा रही है और वह दोनों शून्य में कलाबाजी खा रहे हों। फिर तेज एक धमाके की आवाज हुई और वह दोनों जैसे पाताल में जा पड़े। यह एक गहरा कुआं था। कुछ देर के लिए तो कर्नल के भी होश उड़ गये। कुएं में पानी घुटनों तक ही था। अतः कर्नल खड़ा हो गया और उसने हमीद को पुकारा ···हमीद···।'

'मैं यहां हूं···।' कोई डेढ़ गज के फासले से हमीद की भयभीत आवाज सुनाई दी। अन्दर घुप अन्धेरा था।

टार्च है न तुम्हारे पास ? कर्नल ने पूछा।

हमीद ने कहा, नहीं ! कहीं गिर गई।

अब कर्नल पछता रहा था कि वह यहां क्यों आया ? अब क्या होगा ? उसने फिर पूछा—'क्या माचिस भी नहीं है तुम्हारे पास ?'

है···मगर गीली।

वही लाओ···कहकर कर्नल उसकी ओर सरकता गया। पास पहुंचकर उसने माचिस ली और दो तीलियां एक साथ जलाईं उसने देखा कि वह पत्थरों से बने एक ऐसे कुएं में है जो नीचे चौड़ा मगर ऊपर से तंग था। दीवारें इतनी सपाट और चिकनी कि कहीं हाथ न अटकता था हमीद ने कहा, 'पुराने जमाने में ऐसे कुएं बनाए ही जाते थे दुश्मन को खत्म करने के लिए।

कर्नल ने हमीद को ऊपर दिखाकर बताया कि वहाँ सरकंडे बिछाकर ऊपर मिट्टी डाल दी गई और किसी जानवर को मार कर उसका खून बिखेर दिया गया हमें भुलावा देने के लिए। यह जाल हमारे लिए जालिम खां ने ही बिछाया है। उस कमबख्त को इस खण्डहर की पूरी जानकारी है शायद ? हमीद ने कहा।

कर्नल ने भर्राई आवाज में कहा, 'मुझे दुःख है हमीद, मैंने अपनी जिद के लिए तुम्हें भी खतरे में डाल दिया।

'तो क्या हमारी कब्र इसी कुएं में बनेगी ?' हमीद ने जोकराना अन्दाज में पूछा।

'लगता तो कुछ ऐसा ही है।' कर्नल ने कहा, मगर हमें मालूम होना चाहिए अगर हम कल तक भी यहां से न निकल सके तो मुझे विश्वास है कि इन्स्पेक्टर चौहान हमें ढूंढने अवश्य आएगा।

क्या तुम किसी को अपना यहाँ आना बता के आए थे ?

सिर्फ सुशील को बताया था, मगर सर-सरी तौर पर।

वहां से पचास गज दूर खड़ा जालिम खां अपने शिकार की दुर्गति देख रहा था। उसे चिन्ता थी कि कहीं यह दोनों किसी तरह यहां से निकल न जायें। एक जंगली खरगोश के खून से उसने दोनों को जिस सफलता के साथ चक्कर में डाला उस पर वह अति प्रसन्न था। अब वह अपने शिकार

की तड़प का तमाशा देखने उस सुरंग वाले कुएं के पास आ गया। उसने अन्धेरे में सुना, 'जब मरना ही है तो फिर निकलने की कोशिश क्यों न करें? यह कर्नल की आवाज थी। इसे सुनकर जालिम खां बड़बड़ाया।' महीनों टक्करें मारते रहो बेटा तब भी न तुम यहां से निकल सकोगे न कोई इधर आएगा तुम्हें निकालने। कुछ मुद्दत बाद दोनों के ढांचे ही निकलेंगे यहाँ से।'

इसी तरह मन ही मन प्रसन्न होता वह फिर बाहर आ गया और अपनी कार पर बैठ शहर चल पड़ा।

ठीक दस बजे शहाब रेहाना मंजिल में दाखिल हुआ। मां बेटी उसका बड़ा बेताबी से इन्तजार कर रही थीं। बाहर का दरवाजा इसी लिए खुला था। अन्दर जाते ही शहाब ने उसे बन्द कर दिया। फर्जाना उसे देखते ही आवेग से खड़ी हो गई। उसकी आंखें बरसने लगीं। शहाब भी अपने आँसूओं को रोक न सका। शयानी बेटी सोलह साल से बिछड़े माँ-बाप को मिलने देने के लिए दूसरे कमरे में चली गई। सलीम ने फर्जाना को गले लगा लिया। थोड़ी देर बाद रेहाना भी वहाँ आ गई। अब शहाब उन्हें अपने निकलने से लेकर आज तक की कहानी सुना रहा था।

कहानी सुनकर फर्जाना ने कहा, 'मगर तुम्हें होशियार रहना चाहिए. सलीम जालिम खाँ बड़ा चालाक है। पुलिस अब भी तुम्हारी तलाश में है

मगर मुझे पहचानना अब बड़ा मुश्किल है फर्जाना। मुझे खतरा कर्नल विनोद की तरफ से हो सकता था, मगर खुदा के फजल से वह मेरे साथ है...यानि उसे मुझ पर न तो शक है न मुझसे नफरत। यहाँ मुझे पहचाना है तो सिर्फ दो व्यक्तियों ने...।

कौन-कौन हैं वह?

एक तुम और एक तुम्हारा बूढ़ा माली रहीम।

क्या रहीम ने आपको पहचान लिया?

मुझे देखते ही...परसों अचानक मुझे देखते ही उसने कहा, 'आह? सलीम साहब हैं क्या? और फिर उससे काफी देर मेरी बातें हुईं। मैंने उससे आप लोगों का हाल पूछा और उसे हिदायत की कि वह मेरा जिक्र भूल कर भी किसी से न करे।

रात के ग्यारह बजे तक शहाब अपनी पत्नी और बेटी के साथ हंसता बोलता रहा। घड़ी में ग्यारह देखकर वह जाने की तैयारी कर ही रहा था कि दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। फर्जाना का मुंह पीला पड़ गया। उसने घबरा कर शहाब को सामने परदे के पीछे छिप जाने को कहा। वह परदे की आड़ में हो गया। रेहाना ने दरवाजा खोला तो रहीम था। सब की जान में जान आ गई। शहाब भी हँसता हुआ परदे के पीछे से निकला और उसने पूछा, 'कैसे हो रहीम मियाँ? मैं आप ही की तलाश में आया था।' रहीम बोला, 'मैं आपको सुबह से ढूंढ़ रहा था। यहाँ बाग में आपकी गाड़ी खड़ी देखी तो समझ गया कि आप यहीं हैं।'

'कोई खास काम है क्या?'

'जी हाँ!' कहकर उसने बताया कि फिरोज शाह कोटला में मैंने जालिम खां को किसी से यह सरगोशी करते सुना था कि शहाब, कर्नल और उसके साथी हमीद को ठिकाने लगा दिया जाये।

यह सुनकर तीनों अवाक् रह गए। रेहाना ने घबराकर कहा, 'इसका मतलब है अब्बाजान और कर्नल की जान खतरे में है? हमें उनकी फौरन मदद करनी चाहिए...।'

'हाँ!' शहाब ने कहा, 'मैं अभी-अभी उन्हें ढूंढ़ता हूं।' शुक्रिया रहीम भाई! मैं अभी जाकर उन्हें जालिम खां के इरादे बताता हूं।' यह कहकर शहाब वहाँ से चल पड़ा, नूर महल-होटल पहुंचकर उसने देखा सुशील कैस गिनकर होटल बन्द करने की तैयारी में था। उसने कहा, 'मैं कर्नल से मिलना चाहता हूं...।

सुशील ने कहा, 'वह तो शाम से कहीं गए हुए हैं।'

'दोनों।'

'जी हाँ!'

'मगर कहां?'

'पता नहीं।' मैंने वैसे पूछा था तो हमीद ने शायद तुगलकाबाद बताया था मगर...उस वीरान खण्डहर में अब तक क्या कर रहे होंगे वे? शहाब चिन्ता में पड़ गया। बारह बज रहे हैं...उन्हें तो कब का आ जाना चाहिए था? कुछ देर वह खड़ा सोचता रहा, फिर वह रहीम को साथ लेकर तुगलकाबाद रवाना हो गया।

सुनसान सड़कों को पार करती शहाब की कार तुगलकाबाद के खंडहर के सामने जाकर रुक गई। शहाब ने रहीम से पूछा, 'तुमने तो किला देखा हुआ होगा। मेरा ख्याल है हमें इधर-उधर न भटककर किले की सब से छिपी हुई और खतरनाक जगह पर जाना चाहिए।

रहीम ने कहा, 'मैं यहां का चप्पा-चप्पा जानता हूं।' मगर जरा मुझे सोचने दो कि ऐसी जगह कौन-सी हो सकती है? थोड़ी देर सोचकर कहा, 'हां याद आया। स... खतरनाक तो यहां एक सुरंग है जो ... फलांग अन्दर जाती है। फिर वह उस... द्वार है जिसके अन्दर एक कोठरी है...।

'बस तो वहीं चलो।' शहाब ने क...
'उसी सुरंग में...।'

'इस वक्त?' रहीम ने घबराकर कहा...

शहाब बोला, 'इसमें डरने की क्या ब... है?' मैं तुम्हारे साथ हूं और मेरे साथ ... है...उसने रहीम को रिवाल्वर दिखाया... फिर दोनों टार्च की रोशनी में कदमों ... निशान खोजते सुरंग की ओर बढ़े चले गये... सहसा शहाब ने ठिटक कर जमीन पर देख... हुए कहा, 'खून?'

रहीम कांप उठा। उसकी आंखें भय... फटी रह गईं। उसने कांपती आवाज ... कहा—'खुदा खैर करे...जल तू जलात तू...

टार्च की रोशनी में उन खून के धब्बों... को देखते वह लोग सुरंग के अन्दर पहु... गए। अब वह उसी मध्य भाग में थे। उ... कमरे के बीच एक अन्धेरा गड्ढा दिख... दिया। उन्होंने उसमें टार्च की रोशनी डा... तो आवाज आई जैसे कोई किसी से ब... रहा हो।

'ओह...शायद कोई गिर पड़ा।' ... कर शहाब ने फिर टार्च की रोशनी डा... और चिल्लकर पूछा—'कौन हो तुम लोग...

'कौन...मिस्टर शहाब?' यह कर्नल ... आवाज थी। शहाब ने कहा—'हाँ-हाँ। कर्... विनोद मैं शहाब हूं।'

'कहीं से कोई रस्सा ला सकते हो?

'रस्सा तो नहीं...।' शहाब ने क... 'मगर ठहरिये मैं मोटर में देखता हूं।'

'जरा जल्दी...।' कर्नल ने कहा—'कैप्ट... हमीद बेहोश हो चुका है और मैं उसे मुश्कि... से थामे खड़ा हूं।'

'मैं अभी लाया...कहकर शहाब अप... मोटर की ओर दौड़ा। संयोग से दूसरे द... वाजे के पास उसे एक मोटा-सा रस्सा प... मिल गया। वह लेकर उसने रहीम के ह... में जलती टार्च देकर कुएं में लटका दिया...

कर्नल ने रस्सा हमीद की बगलों ... निकाल उसे कस कर बांधा और नीचे ... हाथ का सहारा देकर उसे ऊपर खींचने ... कहा। हमीद को एहतियात से खींच लि... गया। इसके बाद कर्नल रस्सा पकड़क... ऊपर आया। दोनों बर्फ की तरह ठंडे हो ... थे। रहीम और शहाब ने कैप्टन को उठा... कार की पिछली सीट पर डाल दिया। कर्न... उसके पास बैठा। शहाब ने अपना ओ... कोट दोनों पर डाल दिया। कार होटल ... ओर चल पड़ी। **(शेष आगामी अंक में...**

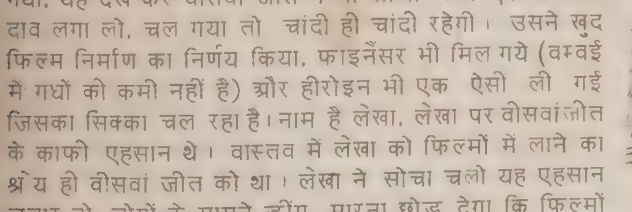
निर्माता और
नीदेशक–
बीसवां जीत



संगीत:
आंधी बर्मन
गीत: मेज रूह

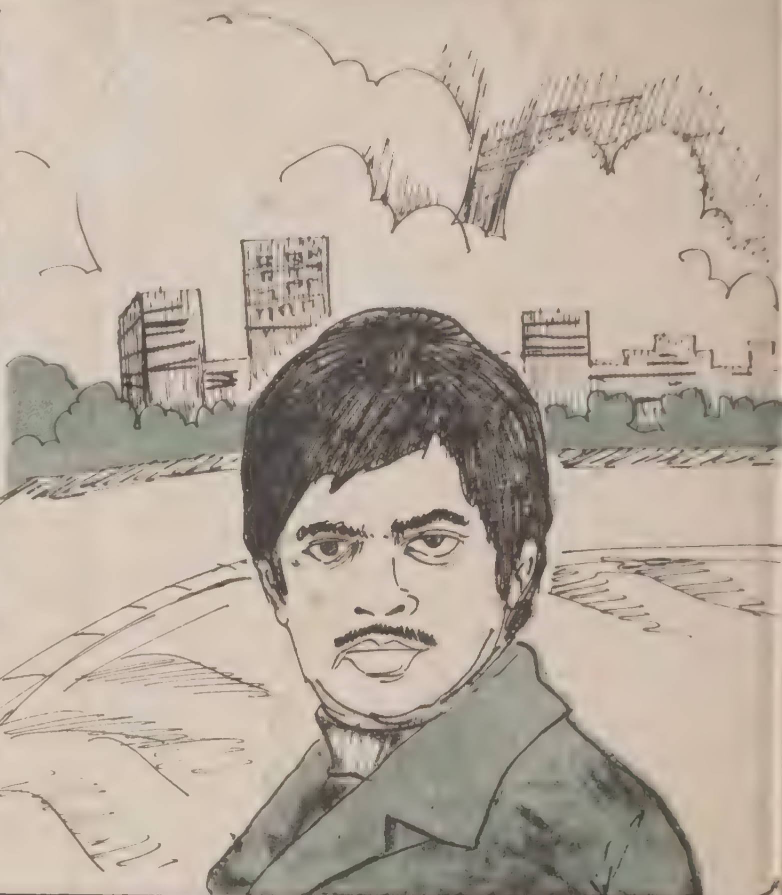
लेखा,.
सेमा मालिनी,
जाट, बीसवां
जीत, शाट
गन सिन्हा

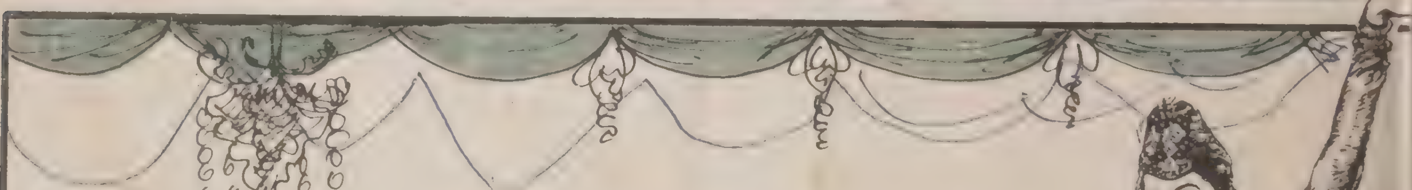
तो सुनिये इस फिल्म की कहानी ! एक था हीरो, नाम था उसका वीसवा जीत। एक जमाने मे उसकी तूती बोलती थी, तीन-तीन शिफ्टों में काम करता था। फिर जरा लोगों को अक्ल आई, साथ ही जनता की रुचि और वक्त ने पलटा खाया। उसकी दो-तीन फिलमे पिट गई और साथ ही उसके भाग्य का सितारा पिट गया। वैसे एक्टिंग उसे कभी आयी ही नहीं : बेचारा बेकार होकर छोले-भतूरे बेचने लग गया। उसके साथ ही कई और हीरो भी छोले-भतूरे बेचने पर मजबूर हो गये थे। इनके नाम कुनील दत्त और खाजेन्द्र कुमार थे। फिर इनमें से पहले वाले हीरो की एक फिलम चल निकली, साथ ही कुनील फिर सफलता के आसमां पर चढ़ गया, यह देख कर वीसवां जीत ने भी सोचा चलो एक आखिरी दाव लगा लो, चल गया तो चांदी ही चांदी रहेगी। उसने खुद फिलम निर्माण का निर्णय किया, फाइनेंसर भी मिल गये (वम्बई में गधों की कमी नहीं है) और हीरोइन भी एक ऐसी ली गई जिसका सिक्का चल रहा है। नाम है लेखा, लेखा पर वीसवांजीत के काफी एहसान थे। वास्तव में लेखा को फिलमों में लाने का श्रेय ही वीसवां जीत को था। लेखा ने सोचा चलो यह एहसान उतार दो, लोगों के सामने डींग मारना छोड़ देगा कि फिलमों में उसे वही लाया था। लेखा दो चीजों में होशियार है एक दोस्ती करने में और दूसरे लड़ाई में ?

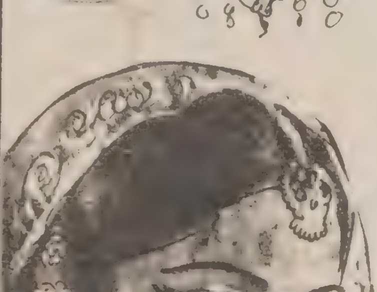




ग्रौर फिर सलाह हुई कि फिल्म में शॉटगन सिन्हा को भी लिया जाये क्योंकि एक्टर तो वह भी वुरा नहीं था। दर्शकों में उसके चहेतों का एक खास वर्ग भी है ! वैसे भी वेचारा उन दिनों कुछ खाली खाली-सा फिर रहा था क्योंकि हाल में ही उसकी कई फिल्मे वड़े शानदार रूप से फ्लॉप रही थीं। उन फिल्मों की सूची काफी लम्वी है। उदाहरणतया गाय ग्रौर गोरी, मिलाप, वदला, शैतान, एक नारी दो रूप, सवक, कुन्दन, जग्गू ग्रौर ग्रनोखा ग्रादि-ग्रादि। इन फिल्मों की ग्रसफलता ने निर्माताग्रों को उसके प्रति सचेत कर दिया था, लिहाजा उसके पास गिनी-चुनी फिल्में थीं। इसलिये ग्रधिकतर समय पार्टियों में डींग मारने ग्रौर शराव पीने पर काट रहा था। पहले-पहले तो लोग उसकी डींगें सुनने में रस लेते थे,पर ग्रव सव उसकी डींगों से परिचित हो चुके थे। इसलिये जव भी वह कोई नयी डींग शुरू करता तो श्रोतागण वाथरूम जाने का वहाना वनाकर खिसक जाते थे। डी. डी. टी. ने ग्रव मक्खियां भी वहुत कम कर रखी हैं जिनको मारा जाये। वेकारी के दिनों में वीसवां जीत उसकी वातें सुना करता था। कुछ न करने से तो कुछ करना ही ग्रच्छा है। ग्रव भी शॉटगन जव-जव मिलता तो डींग ग्रौर गप्पवाजी शुरू कर देता। वीसवांजीत ने सोचा कि ग्रगर इसे काम न दिया तो यह प्रायः ग्राकर उसके कान खाता रहेगा। काम नहीं करने देगा। लिहाजा इसे भी फिल्म मे कोई एक रोल दे दो। इसका मुँह वन्द हो जायेगा। उसके वाद केवल रटे हुये डायलॉग ही वोलेगा।

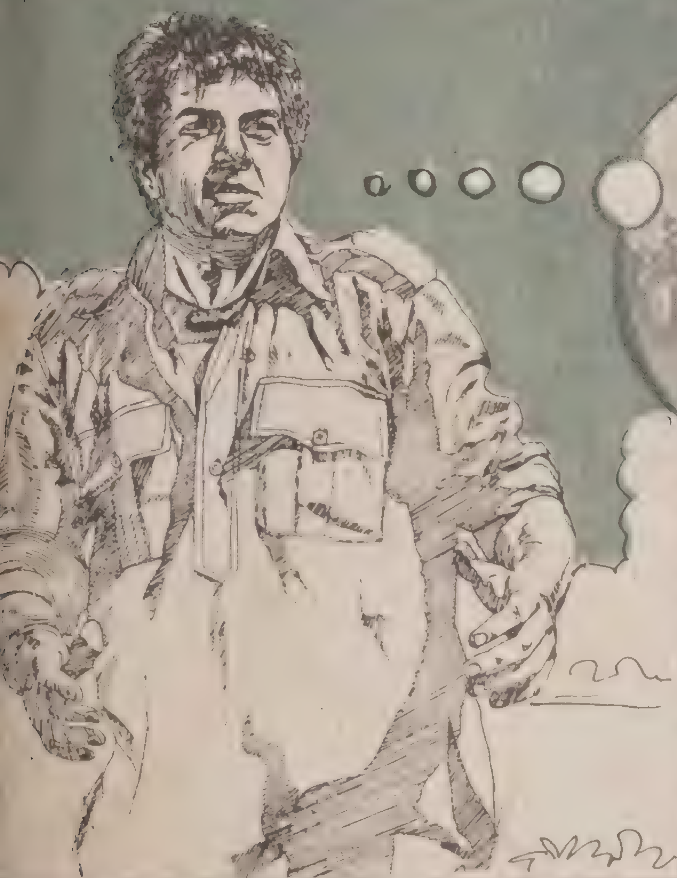






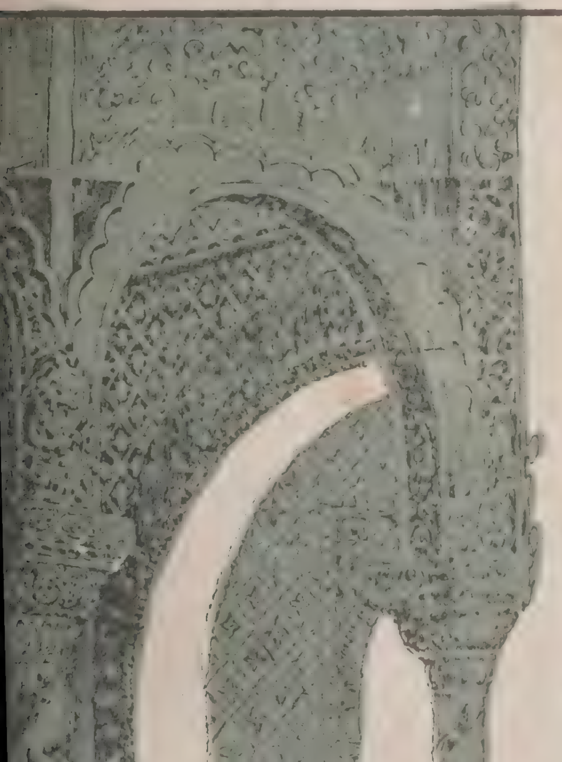
ग्रव साहव, वीसवां जीत ने सोचा चलो लेखा तो हो गई फिर भी फिल्म में मसाले की कोई कमी नहीं रहनी चाहिये क्योंकि यह उसका ग्राखिरी दाव था। सेमामालिनी का नृत्य फिल्मों में वहुत वड़ा ग्राकर्षण है। वीसियों दर्शक ऐसे हैं जो केवल सेमा का मुँह ताकने हाल में जाते हैं। नृत्य में एक ग्रौर भी लटका है, वह यह कि नृत्यांगना जेवर पहनती है। जेवरों द्वारा सेमां का सौंदर्य ग्रौर उभार कर दर्शकों को उल्लू वनाया जा सकता है। निदान वीसवां जीत ने सेमा को भी एक साइड रोल में लेने का निश्चय किया। सेमा पर भी वीसवां जीत के कुछ ग्रहसान थे। कहते हैं कि एक वार एक फिल्मी पार्टी में सेमा को छींक ग्रा गई थी ग्रौर वीसवां जीत ने विजली की फुर्ती से ग्रपना रूमाल निकाल कर उसे पेश किया था। उसी ग्रहसान से सेमा दव गई थी। इसीलिये ग्रापने देखा होगा कि सेमा प्रायः दवी-दवी नजर ग्राती है। ग्रव सेमा का फिल्म में होना ग्रौर उसका नृत्य पेश करना, वीसवां जीत को काफी ग्राशा दे रहा था कि वेटा ग्रव तो पब्लिक फंसी ही फंसी समझ लो ?







ग्रव किस्सा यह है कि सेमा को लेने का साफ मतलव यह है कि जाट हीरो को भी गेस्ट रोल में लेना होगा क्योंकि उसे न भी लिया जाये तो भी वह सेमा के पीछे-पीछे सैट पर जरूर ग्राता या सैट पर न भी ग्राता तो भी वह फोन पर सेमा को उलझाये रखता। इसका रामवाण इलाज यही था कि उसे भी गेस्ट रोल मे लिया जाये। वह सैट पर ग्राकर वेकार वैठा रहता तो सम्भव था कि सिगरटें फूंकता जाता ग्रौर सैट पर ग्राग लगने की संभावना रहती। दूसरी वात यह भी थी कि उसके सैट पर होने का ग्रर्थ यह भी होता कि शूटिंग देखने ग्रायी लडकियां उसे देख कर हंगामा खड़ा करतीं ग्रौर शूटिंग में वाधा पहुंचातीं। जाट को रखने का फायदा ही था ग्रौर वह रोल पर ऐसे ही झपटा जैसे कुत्ता हड्डी पर झपटता है, जव इसने सुना फिल्म में सेमा भी गेस्ट रोल में है !

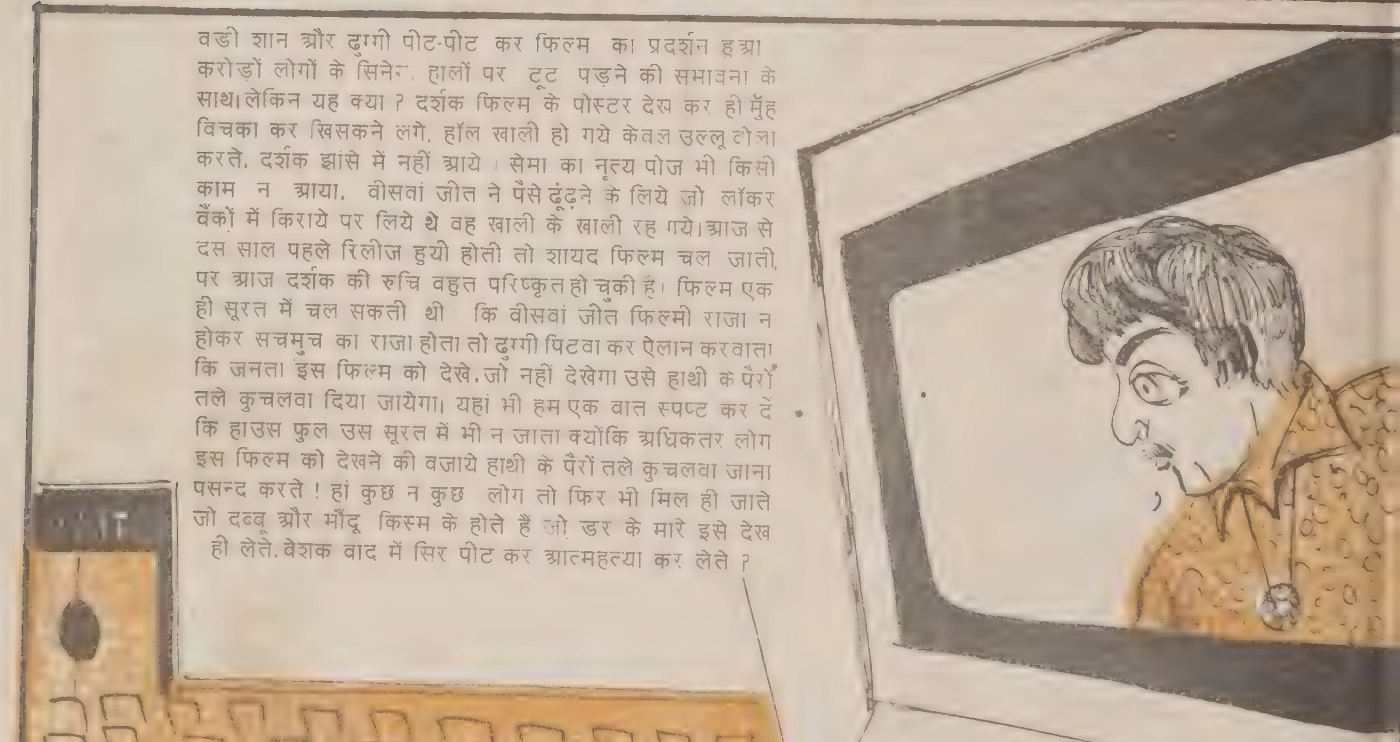


यह सारा मसाला तो इकट्ठा हो गया। ग्रव सवाल कहानी का था वैसे तो वीसवां जीत को यकीन था कि एक्टर-एक्ट्रेसों का काफी जमघट इकट्ठा हो गया है फिलम तो हिट होगी ही, लेकिन फिर भी इस जमघट को परदे पर दिखाने के वहाने के रूप में कुछ न कुछ कहानी तो चाहिये ही। कहानी भी ऐसी होनी चाहिये कि जो ग्रामतौर पर चलती हो वही लटके वाजी वाली हो, हिन्दी फिल्मों का पुराना रोग डवल रोल का है। वीसवां जीत भी इस लालच से कैसे वचता, निदान कहानी डवल रोल वाली ली गई। इन लोगों को यह समझ नहीं ग्राया कि डवल रोल वास्तव में एक एक्टर को ग्राभनय प्रतिभा का व्यापक क्षेत्र (रेंज) दिखाने क लिये वढिया फार्मूला है जैसे दिलीप कुमार के लिये। लेकिन जहा ग्रभिनय प्रतिभा ही न हो वहा डवल रोल ऐसा है जैसे एक तो कड़वा दूसरे नीम चढ़ा, तो साहव डवल रोल भी एक रोल राज कुमार वाला रखा गया। इसका लाभ? लाभ यह कि राज महल दिखाने के लिये भव्य सैट लगवाये जा सकते हैं, राजसी ठाट ग्रौर शानो-शौकत का खुल कर प्रदर्शन किया जा सकता है। यह भी भारतीय दर्शक की कमजोरी है, भारतीय मूल रूप से पलायन वादी होते हैं। वह परदे पर ठाट वाट देखना पसन्द करते हैं, संतोष प्राप्त करते हैं जव कि वास्तविक जीवन मे इनकी कल्पना ही नहीं कि जा सकती। दर्शकों का शोषण करने के कई रूप हैं।





तुम वहुत थक गये हो क्यों इतनी मेहनत करते हो ?
पसीने से तरवतर होकर कहा से आ रहे हो ? क्या कोई पहाड़ खोद कर आ रहे हो ? या सडक वना रहे थे ?
दस्तखत करने की प्रैक्टिस ? क्यों ?
मेहनत तो करनी ही पड़ेगी. वगैर इसके गुजारा नहीं ?
मैं वागीचे में बैठ कर दस्तखत करने की प्रैक्टिस कर रहा दस घंटे दस्तखत करते-करते थक गया।
तुम्हें तो पता ही है कि आजकल कैसा ट्रैंड चल रहा कुनील दत्त की हीरा हिट होगई तो उसे एकसाथ इतनी फिल्मों ऑफर मिले. सौ के आस-पास। अव मेरी यह फिल्म हिट हो जाने तो मुझे भी ऑफर मिलेंगे. सैंकडों की तादाद में ! कान्ट्रेक्टों सिगनेचर करने पड़ेंगे. मैं इसीलिये दस्तखत करने की प्रैक्टिस कर रहा था ?



वडी शान और ढुग्गी पीट-पीट कर फिल्म का प्रदर्शन हुआ करोड़ों लोगों के सिनेमा हालों पर टूट पड़ने की सभावना के साथ। लेकिन यह क्या ? दर्शक फिल्म के पोस्टर देख कर ही मुँह विचका कर खिसकने लगे. हॉल खाली हो गये केवल उल्लू बोला करते. दर्शक झांसे में नहीं आये। सेमा का नृत्य पोज भी किसी काम न आया. वीसवां जीत ने पैसे ढूंढ़ने के लिये जो लॉकर वैंकों में किराये पर लिये थे वह खाली के खाली रह गये। आज से दस साल पहले रिलीज हुयी होती तो शायद फिल्म चल जाती, पर आज दर्शक की रुचि वहुत परिष्कृत हो चुकी है। फिल्म एक ही सूरत में चल सकती थी कि वीसवां जीत फिल्मी राजा न होकर सचमुच का राजा होता तो ढुग्गी पिटवा कर ऐलान करवाता कि जनता इस फिल्म को देखे. जो नहीं देखेगा उसे हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया जायेगा। यहां भी हम एक वात स्पष्ट कर दें कि हाउस फुल उस सूरत में भी न जाता क्योंकि अधिकतर लोग इस फिल्म को देखने की वजाये हाथी के पैरों तले कुचलवा जाना पसन्द करते ! हां कुछ न कुछ लोग तो फिर भी मिल ही जाते जो दब्बू और भौंदू किस्म के होते हैं जो डर के मारे इसे देख ही लेते. वेशक वाद में सिर पीट कर आत्महत्या कर लेते ?
दि एंड ऑफ
विश्वाजीत'स फिल्म कैरियर

पृष्ठ १८ से आगे)

उजागिर सितिया उर्फ सीता का
प देखकर पसीने से तर-बतर हो गया था
क-एक बेंगन में पांच-पांच पिल्लू और बेंगन
री गाली सुनकर उसको मतली आ रही
, सो सीता को देखने के बाद ही दूर हो
ई। ...यही है रूप ! यही है रूप !

उसने गला साफ किया, 'माताराम !
क आने की बेंगनी नहीं, चार आने की।'

बूढ़ी बोली, 'ऊं ! ई आदमी का मन
-रहकर बदलता है। जो बोलना हो, एक
बार क्यों नहीं बोलते ?'

उजागिर चुप रहा। किन्तु गाहक का
क्ष लेकर बोली सीता, 'एक बार बोले, चाहे
जार बार—तू इस तरह गाहक से बात-
त पर 'रगड़' करेगी, तो एक पाई की
नी भी नहीं बिकेगी।'

बूढ़ी कढ़ाही में बेंगनी डालती हुई बोली,
ड़ी आई है 'भातार' का पच्छ लेने !'

जब बूढ़ी और जवान जीभों की 'बत-
ट्टी' जोर पकड़ने लगी, तो उजागिर ने
र्दानगी दिखलाई, 'छिः-छिः, आप लोग इस
रह बेवजह लड़िएगा तो रखिए अपनी
नी ! ऐसी बेंगनी कौन खाए ?'

सीता बोली, 'लो, सुनती है ? अब
नो बैठकर चार आने की बेंगनी। देखूं
न खाता है ?'

बूढ़ी बोली, 'नहीं खाइएगा, तो पैसा दे
एगा।'

सीता ने उजागिर को पहली बार नजर
ठाकर देखा और मुंह की बात मुंह में ही
कर अन्दर चली गई।

उजागिर बैठकर सोचता रहा, 'चार
ने की बेंगनी वह खा सकेगा ? यह चंगेरी
बेंगनी !'

बूढ़ी सहुआइन ने फिर पुकारा, 'अरी,
सितिया ! पत्तल कहां है ? बेंगनी तेरे
ाल पर परोसूं ?'

उजागिर बेंगनी खाने लगा। तब बूढ़ी
नरम सुर में कहा, 'भैया, बुरा मत मानना।
जली सितिया सीधी बात कभी सुनती ही
। ठहरो, मैं पानी ला दूं।'

बूढ़ी के उठने के पहले ही सितिया
ी दे गई, 'मैं जानती हूं। अब गाड़ी आने
समय हुआ तो, तू कोई न कोई बहाना
कर चूल्हे के पास से उठेगी ही। कड़ाही
कर सड़क पर फेंक दूंगी। हां !'

बूढ़ी बैठ गई फिर। वह कोई भद्दी
ी जीभ पर चढ़ा रही थी कि उजागिर
ाक दिया, 'यहाँ एक चाह की दुकान खूब
गी, माताराम ?'

सहुआइन ने पोपले मुंह को तनिक
विकृत करके पूछा, 'क्या चलेगी खूब ?'

'चाह की दूकान।'

'कौन खोलेगा ?'

'कोई भी खोले, चलेगी खूब।'

बूढ़ी अब कुढ़कर बोली, 'आग लगे चाह की दूकान में। एक पकौड़ी के चूल्हे में ही मेरी हड्डी जलकर 'छार' हो रही है।'

सीता ने इस बार फिर उजागिर को देखा। चाह की दूकान की बात सुनकर ही उसने ऐसी निगाह से 'हेरा' है। उजागिर बोला, चाह में अठगुना नफा है। चार आने के माल में दो रुपए मुनाफा !'

'दो रुपये !' बूढ़ी मौसी और जवान सीता ने एक ही साथ अचरज भरे स्वर में कहा, 'दो रुपये !'

बूढ़ी कुछ क्षण चुप रहने के बाद बोली, 'रहने दो, बाबा, मुनाफा। यहां चाह कौन पिएगा ?'

सीता ने कहा, 'मिलने पर सभी पिएगा।'

उजागिर बोला, 'वाजिब बात।'

बूढ़ी ने छनौटा चमकाकर पूछा, 'मैं पूछती हूं, चाह बनाएगा कौन, तेरा भतार ? एं ?'

सीता ने इस बार जवाबी गाली दी, 'मेरा नहीं, तेरा !'

आश्चर्य ! गाली सुनकर पोपली बूढ़ी हंस पड़ी। सीता भी हंसी और उजागिर का कलेजा जोर से धड़कने लगा। कुछ देर तक चुप रहने के बाद उसने तौलकर बात शुरू की, 'हां, चाह की दूकान तो मर्द-पुरुष ही चला सकता है।'

बूढ़ी ने लम्बी सांस ली। सीता फिर आंगन के अन्दर चली गई।

उजागिर बहुत देर तक बूढ़ी मौसी को विस्तारपूर्वक चाय की दूकान की योजना के सम्बन्ध में समझाता रहा।

दूसरी गाड़ी के लौटने के पहले ही उजागिर ने बूढ़ी को अपनी मीठी बोली से मोह लिया, 'माताराम ! आप लोगों की मर्जी हो तो मैं आज ही जाकर सामान ले आऊं।'

'तुम्हारा घर कहां है ?'

'रहिकपुर।'

'कौन जात !...अरे, तब तो बिरादरी के ही निकले।'

बात पक्की हो गई।

उजागिर कुरसेला बाजार आया और चाय की दूकान का सारा सामान खरीदकर रात की गाड़ी से ही वापस लौटा। बूढ़ी ने कहा 'अरे, तुम सचमुच लौट आए ? मैं तो समझ रही थी कि कोई लुच्चा लबड़ा आकर ऊन का दून हांककर चला गया।'

अन्दर सीता ने झिड़की दी, 'मौसी, तू बूढ़ी हुई, लेकिन आदमी को पहचानना नहीं आया।'

चाय की दूकान का सामान देखकर बूढ़ी और जवान आंखें अचरज से बड़ी हो गईं, इतना सामान लगता है चाह की दूकान में ?'

रात में सीता ने अपने हाथ से भात-दाल परोसकर खिलाया था—पहली बार। पुरानी बातें याद करके आज भी उजागिर की देह सुड़सुड़ाने लगती है। सीता की बोली सीता की हंसी। सीता का चलना फिरना ! दिन-रात उजागिर मानो सपनों की दुनिया में ही रहता था—रूप पीकर जीता था।

चाय की दूकान खुली और चल निकली।

गांव भर में बात फैल गई, 'बूढ़ी सहुआइन का एक रिश्तेदार आया है। चाय की दूकान खोले है। अब पियो घर बैठे—चाह गरमागरम !'

बस के ड्राइवर, कंडक्टर, पैसेंजर, क्लीनर ने एक स्वर से प्रशंसा की, 'अलबत्ता चाह बनाता है जवान ! चलेगी दूकान।'

लेकिन चाय की दूकान छः महीने भी न चल सकी। पांचवें महीने में ही सीता ने उजागिर को उकसाया, 'क्यों ? तुम्हारा कलेजा इतना छोटा है ? बूढ़ी से साफ-साफ कहते क्यों नहीं ?'

'यदि बूढ़ी 'नकार' जाये ?'

'बला से ! पहले कहके देखो।'

'यदि कहे 'घरजमाई' रहना पड़ेगा ?'

'अभी मान लेना। बाद में फिर...।'

बूढ़ी मौसी आंख से कम देखती थी और कान से जरा कम सुनती थी। किन्तु बिना कुछ देखे-सुने ही वह सब कुछ समझ चुकी थी। इसलिए जिस दिन उजागिर ने हकला-तुतलाकर प्रस्ताव किया था, बूढ़ी ने एक भद्दी गाली दी थी, सो बार सतुअन और भतार के आगे दतुअन। अब बाकी ही क्या रहा है ?...छतहर-कलस में अब कौन पण्डित-पुरोहित वेद-मंतर पढ़ेगा ?...खूब पियो गरमागरम चाह !'

बूढ़ी सहुआइन अपनी पकौड़ी की दूकान पर बैठी आज भी गालियां दे रही होगी, 'उस मिठवचना ने आते ही चाह पिलाकर इस मुई को मुट्ठी में कर लिया।...दिन-रात खुसुर-फुसुर मैं नहीं देख सकती थी।' जवाब दे दिया—'तुम लोग अपना रास्ता देखो।'

और इसी को कहते हैं 'तिरिया के भाग से मिले राज !'

सीता नहीं, लक्ष्मी !

रानीगंज से कुरसेला जाने वाली बस पर सवार होकर, रूपवाली दुलहिन को साथ लेकर उजागिर गांव लौट आया। लौटकर उसने सुना, 'इधर भी नई सड़क खुलने वाली है। बहुत जल्दी ही !'

सचमुच लक्ष्मी है प्रदीपकुमार की माय!

बनने वाली नई सड़क के ठेकेदार ने उजागिर की झोंपड़ी में ही डेरा डाला था।

गाँव के लोगों ने घुमा-फिराकर उजागिर को समझाया, 'घर में जवान और खूबसूरत बहू और बाहर 'पलानी' में परदेसी का बासा, अच्छी बात नहीं।'

संतोखीसिंघ जब मिलता, दिन दहाड़े 'चमचोरी' की कहानी सुनना नहीं भूलता। उजागिर घर लौटकर अपनी रूपवती को निहारते हुए कहता, 'जानती हो ? गांव के लोग क्या कहते हैं ?'

'गाँव के लोगों की बात सुनोगे या ठेकेदारजी की ? ठेकेदारजी कहते हैं, सड़क जब खुलेगी, चाह और पकौड़ी की दूकान तब खोलना। अभी इतने 'जन-मजूरे' काम कर रहे हैं। अभी चावल-दाल की दूकान खोल दो। मजदूरों को उधार खिलाओ और हफ्ता के बाद एक का डेढ़ वसूलो। यही मौका है।'

'सच ? और यदि उधार खाकर भाग जाएं सभी—तब ?'

'भागकर कहाँ जाएंगे ? उनकी चुटिया तो ठेकेदारजी के हाथ में है।'

'सच ? तुम ठीक कहती हो बिरौली वाली। ठेकेदार साहब सचमुच बहुत अच्छे आदमी हैं।'

'ए ! तुम मुझे बिरौलीवाली क्यों कहते हो ? मुझे अच्छा नहीं लगता।'

'तब क्या कहूं ?' उजागिर खिलखिला कर हंसता, 'ओ ! अब मैं भी ठेकेदार साहब का दिया हुआ नाम ही कहूंगा, रेशमबहू। ठेकेदार साहब सचमुच बहुत अच्छे आदमी हैं।'

गाँव के नौजवानों ने उजागिर को चिढ़ाने के लिए एक बोली निकाली, 'ठेकेदार साहब सचमुच बहुत अच्छे आदमी हैं।'

अच्छा आदमी को अच्छा आदमी नहीं कहे, तो क्या कहे ? गाँव के लोग जलते हैं। उजागिर की बहू रूपवती है। सुलच्छनवाली है। है किसी की बहू ऐसी, गाँव में? जिसके आते ही गांव में नई सड़क खुल गई, इलाके में ! चावल-दाल की छोटी सी दूकान खोल कर पांच ही महीने में दस बीघे जमीन किस ने खरीदी है ? लोग तो जलेंगे ही। ठेकेदार साहब अंग्रेजी में चिट्ठी लिखते हैं। है कोई अंग्रेजिया इस गाँव में ? रेशमबहू ठीक कहती है—काम ऐसा करो कि 'देख पड़ोसी जल मरें।'

बबुआ का जब जन्म हुआ, तो ठेकेदार साहब ने चमड़े की थैली से पचीस रुपये निकालकर मुंह दिखाई दी थी। छठी की रात में, खुशी के मारे रात-भर बैठकर रमैन बाँचते रहे और यह प्रदीपकुमार नाम भी उन्हीं का रखा हुआ है। गांव के दुखमोचन पण्डित ने तो बस, पतासू नाम रख दिया था। भला, पतासू भी कोई नाम है।

पता नहीं ठेकेदार साहब आजकल किस इलाके में हैं। कहीं भी रहें, आदमी अच्छे हैं। प्रदीपकुमार की माय आज भी हर महीने याद करती है। बोले थे कि बीच-बीच में आकर प्रदीपकुमार को देख जाएंगे।

उस दिन छितनू का रमडोलवा बेटा कह रहा था कि प्रदीपकुमार का मुंह ठीक ठेकेदार साहब जैसा है। पगला है वह !

लाल गाड़ी के ड्राइवर जी भी बहुत भले आदमी हैं। रोज कहते हैं देखो, उजागिर भाई, चूल्हे के पास बैठते-बैठते प्रदीपकुमार की माय का रंग बादामी हो गया है। देह में गमकौआ पोडर लगाने से रंग ठीक रहेगा और दूसरे ही दिन एक डिब्बा पौडर खरीदते आए—पुरनिया साहा कम्पनी से। ऐसा भला आदमी इस गाँव में क्या, इस इलाके में भी खोजने पर मिलेगा?

यह नये दारोगा साहेब भी हीरा आदमी हैं। कह रहे थे इसपी साहेब तुम्हारे पकौड़े की खूब तारीफ करते हैं और जोगबनी के लाला के बेटे की जीभ तो पकौड़े के नाम से ही 'पनिया' जाती है। बारह बजे रात में गाड़ी पर दरोगा साहब के साथ आता है और चुराकर पकौड़े खाता है। वैष्णव लाला जिसके चौके में प्याज नहीं चढ़ता है कभी, वह उजागिर की दूकान में बैठकर कैसे खा सकता है प्याजवाले पकौड़े ? प्रदीपकुमार की माय कहती है लाला का बेटा एकदम गौ जैसा सीधा है। जरा दुबला-पतला है इसलिए पकौड़े के साथ चाह नहीं, अंग्रेजी दारू पीता है। उस रात को प्रदीपकुमार की माय की देह में दर्द था साँझ से ही। दारोगा साहेब ने कहा—एक गिलास ले आओ ! एक घूट पीते ही सब दर्द छूमंतर हो जाएगा। सचमुच ! हुआ भी वही। सांझ से ही कुहरती हुई प्रदीपकुमार की माय टनटनाकर उठ बैठी और लाला के बेटे से मुँहा-मुँही गप करने लगी। लक्ष्मी है प्रदीपकुमार की माय।

तीन बजे वाली गाड़ी आ रही है !

'कहां हो, बबुआ ! माय मैं कहां तिनबज्जी गाड़ी आ रही है। मेरे ड्रा का सब काम रैट है।'

'बबुआ ! प्रदीपकुमार ? माय कहां

प्रदीपकुमार सुबह की मीठी नींद सोया हुआ था। उजागिर चुपचाप बैठ बीड़ी पीने लगा। आज इतना सवेरे प्रदीपकुमार की माय उठ कर कहां गई है तबियत खराब है क्या ? नहीं, लाल गा के ड्राइवर जी ठीक ही कहते हैं—जान है जहान है। प्रदीपकुमार की माय दिन- चूल्हे के पास बैठी रहती है, यह ठीक नहीं पकौड़ी बनाने के लिए, मुगनी की माय मजदूरी देकर रखना होगा।

उजागिर बैठा रहा। जब भुरुकुवा ता डूब गया और उजाला हुआ और प्रदीपकु की माय कोठरी में नहीं आई, तो वह बा निकला। बाहर बर्तन-बासन सब बिखरे हैं। दोनों लोटे भी हैं। तब कहां गई ?

उजागिर ने कोठरी में आकर देखा पेटी खुली पड़ी हुई है—रेशमी साड़ी अ रेशमी बिलौज क्या हुआ ? लगा, ध अचानक घूमने लगी। उसने चिल्ला अपने बेटे को जगाया, 'बेटा ! बबुआ प्रदीपकुमार—माय कहां ?'

प्रदीपकुमार उठ कर जोर-जोर से लगा, 'मैया कहां आऽ आऽ आं !'

प्रदीपकुमार को चुप कराने के लि उजागिर ने अपने को संभाला। फिर बोल 'बेटा, माय गंगा तीर का मेला गई है। दो हर की बरबज्जी (बारह बजे वाली) गा से आवेगी।'

उसने अपने मन को भी समझाया, 'क जायेगी ? कहीं काम से ही गई होगी।'

सुबह की गाड़ियों के आने का सम हुआ। संतोखी सिंघ ठीक समय पर आया। उसने आते ही टोका, 'आज पकौ का चूल्हा नहीं सुलगा है ?'

उजागिर ने जवाब दिया, 'प्रदीपकुम की माय की मौसी का संवाद आया कि व लबेजान है। इसलिए रात की गाड़ी से चली गई।'

प्रदीपकुमार ने कहा कि, 'मैया गंग तीर का मेला गई है।'

संतोखीसिंघ ने पुराने दफादारी की तर जिरह करते हुए पूछा, 'रात में तो सा गाड़ी लौटी नहीं। फिर किस गाड़ी गई ?'

उजागिर ने आज बिना 'बोहनी' हु ही संतोखी सिंघ को चाय का बड़ा गिल

बन्द करो बकवास



दया । संतोखी सिंघ ने चाय पीते हुए कहा जमाना बहुत खराब है। जनाना जात अकेली बाहर जाए...।'

दोनों ओर से गाड़ियां आईं । उजागिर लाल गाड़ी की ओर देखा...नया ड्राइवर ? लालगाड़ी के ड्राइवर जी कहां गए ?' 'छुट्टी ?' 'कितने दिन की छुट्टी ?' 'आज पकौड़े नहीं, सिर्फ चाह मिलेगा भैया !'

दोपहर के बाद उजागिर ने दूकान बंद कर दी ।

उसका दिल अन्दर ही अन्दर टूटने लगता । तब वह ज़ोर-ज़ोर से रोना चाहता। लेकिन प्रदीपकुमार का मुह देखकर वह अपने को सभाल लेता । वही रोने लगेगा तो बच्चे की क्या दुर्दशा होगी ।

'बप्पा ! बरबज्जी गाड़ी आ रही है ।'

प्रदीपकुमार की माय नहीं आई ?' 'बेटा, अभी नहीं आई तो 'तीनबज्जी गाड़ी से आवेगी ।'

'बप्पा ! तिनबज़्जी गाड़ी आ रही है ।

'नहीं आई !'

इस बार बाप-बेटा मिलकर आंगन में रोने लगे । जब प्रदीपकुमार हिचकियां लेते हुए दांत पर दाँत बैठाकर घिघियाने लगा, तब उजागिर को होश हुआ । उसने आंसू पोंछकर कहा, 'रात की गाड़ी से जरूर आवेगी तुम्हारे लिए बिस्कुट लावेगी । ...खिलौने !'

प्रदीपकुमार की माय रात की गाड़ी से ही आई ।

'आ गई, मैया ! मैया आ गई !

प्रदीपकुमार जोर-जोर से रोने लगा। उजागिर भी रोने लगा, 'कहां चली गई थीं तुम प्रदीपकुमार की माय-य-य ?'

'लो लो ! क्या हो गया है तुम दोनों को ?'

'कहां गई थी ? किस गाड़ी से गई ?'

काम से गई थी पुरैनिया। गाड़ी से नहीं, ट्रक से गई थी।'

'कहकर जातीं।'

'काम से पहले, बात कही नहीं जाती।'

प्रदीपकुमार खिलौना पाकर खुश हो गया। उसकी मां ने गठरी से बिस्कुट का डिब्बा निकाला। उजागिर चुपचाप, पलक दृष्टि से देखता रहा—कितने दिनों के बाद प्रदीपकुमार की माय ने रेशमी साड़ी पहनी है।···रूप जरा भी मलिन नहीं हुआ है। कौन कहता है कि गांव का रूप साल लौटते ही ढल जाता है।

अब, प्रदीपकुमार की माय ने आंचल के खूंट से कागज का एक टुकड़ा निकाल कर दिखलाते हुए कहा, 'बोलो तो क्या है ?'

उजागिर ने लालटेन की रोशनी में कागज को उलट-पलट कर देखा, 'भगवान जाने क्या है ! बोलो न, क्या है ? देखने में तो सरकारी कागज जैसा लगता है।'

प्रदीपकुमार की माय हँसी, ठीक ही पहचाना है तुमने। सरकारी कागज ही है। ···परमिट !'

'परमिट ? किस चीज का परमिट ?'

'सिमेंट, कोयला और लोहे के छड़ का।

'क्या करोगी परमिट ?'

प्रदीपकुमार की माय बोल उठी, 'गांव के दुश्मनों को जरा और भी अच्छी तरह जलाऊंगी।'

'जलाएगी ! माने ? ओ-हो, समझा। पक्का घर ए ? सच कहता हूं, प्रदीपकुमार की माय, तुम धन्न हो। अच्छा किया तुमने जो मुझसे पहले ही नहीं कहा। इतनी बड़ी बात मेरे पेट में हरगिज नहीं पचती। सच कहता हूं, मैं पागल हो जाऊंगा। सच तुम लक्ष्मी हो—साक्षात !'

'मैंने क्या किया ? सब लाल गाड़ी के ड्राइवर जी की मेहरबानी है। हाकिम के किरानी से उनकी दोस्ती है।···और जानते हो—इसी परमिट से घर बनाने का आधा रुपया भी निकलेगा।'

'सो कैसे ?'

'देखना, आने दो लालाजी के बेटे को।'

'सच ? हद है ! कल संतोखीसिंघ को पांच गिलास चाय बोहनी के पहले ही पिलाऊंगा।···अब तुमको क्या कहें, प्रदीप कुमार की माय ?'

'रेशमबहू !'

'हि हि हि हि !'

उजागिर के घर की नींव पड़ गई। एक बांस में पुराना झाड़ बांध कर गाड़ दिया गया—बुरी नजर को काटने के लिये। गाँव के लोग मन ही मन जल-भुन कर खाक होने लगे।

किन्तु इधर कई दिनों से उजागिर का मन भी अन्दर ही अन्दर सुलग रहा है। न जाने क्यों ! परमिट का कागज लालाजी के बेटे को देकर ईंट-सिमेंट लोहा लिया गया। ठीक है। लालाजी के बेटे ने परमिट लेते समय प्रदीपकुमार की माय की अंगुलियां टीप दी थीं। इसमें भी कोई हर्ज नहीं। दरोगाजी ने उस दिन दारू के झोंक में कबूतरी कह दिया। सरकारी आदमी का सात खून माफ है। लाल गाड़ी के ड्राइवर जी ने होली के दिन गाल पर अबीर लगा दिया। होली की बात ! फिर ड्राइवर जी भले आदमी हैं। लेकिन···

केतली का खौलता हुआ पानी टोंटी से गिरने लगा। प्रदीपकुमार की माय ने कहा 'लो, लो। तुम्हारा ध्यान कहां है ? होश में हो या···?'

उजागिर बोला, 'खूब होश में हूं।'

उसने केतली उतार दी। मकान बनाने वाला छुछुंदर-मुंहा राज-मिस्तरी बिना कहे-सुने आंगन के अन्दर क्यों गया ? जाने के पहले प्रदीपकुमार की माय को उस तरह आंख की मटकी क्यो मार गया ? प्रदीपकुमार की माय हंसी क्यों ? उठ कर आंगन में गई क्यों ?

उजागिर का मन धुंएं से भर गया मानो।

उसने पुकारा, 'बबुआ ! बेटा प्रदीप-कुमार ?'

प्रदीपकुमार आया। उसका मुंह भी तमतमाया हुआ है। उजागिर ने धीरे से पूछा 'बबुआ, माय कहाँ है ? क्या कर रही है ?'

प्रदीपकुमार बोला, 'बप्पा' मिस्तरी बड़ा बदमाश है। हमको पतासू कहता है।'

उजागिर गुस्सा से दपदपा उठा। उस छुछुंदर-मुहा इतनी हिम्मत ! मेरे बेटे को प्रदीपकुमार को पतासू कहेगा ?

वह उठकर दलहीज के पास गया। आंगन में घुन घुन करके क्या प्राइविट बात हो रही है ? आमने-सामने बैठकर ? मिस्तरी इस तरह बैठा है ?

उजागिर के सिर पर अंगीठी जलने लगी मानो, वह आंगन में जाकर गरजा, 'मिस्तरी ! दीबाल की गंथाई यहीं हो रही है क्या ?'

मिस्तरी अप्रतिभ होकर उठा। हँसती हुई प्रदीपकुमार की माय भी चौंक पड़ी। उजागिर ने धड़ाम से दलहीज का दरवाजा बन्द कर दिया।

प्रदीपकुमार की माय उजागिर की आँखें देखकर डर गई। उजागिर ओठ को दाँतों में भींचता हुआ उसके पास गया। फिर धीरे से बोला, तुम यहां क्या कर रही हो।'

प्रदीप कुमार की माय ने आवाज ऊंची करके कहा, 'क्या हो गया है तुमको ?'

उजागिर चुपचाप अपनी कोठरी में चला गया। अन्दर से उसने पुकारा, 'बेटा ! प्रदीपकुमार ! यहां आओ।'

प्रदीपकुमार अपने बाप के पास चला गया। बाहर, दूकान चूल्हे सुगलते रहे।

गाड़ियां आईं। ड्राइवरों ने हॉर्न बजा-बजाकर पुकारा। संतोखी सिंघ ने आवाज दी। आंगन से कोई जवाब नहीं मिला। किसी ने कहा, 'भाई अब पक्का मकान बनवा रहा है। दूकान पर क्यों बैठेगा ?'

गाड़ियाँ आतीं, रुकतीं, हार्न देतीं, फिर चली जातीं।

दिन भर उजागिर घर से नहीं निकला। प्रदीपकुमार भी दम साधकर बाप के बगल में पड़ा रहा। प्रदीपकुमार की माय ओसारे पर बैठी गुन-गुन सुर में, धीरे-धीरे रोती रही। उजागिर बाहर गया और लात मारकर दोनों चूल्हों को तोड़-फोड़ आया। दलहीज का दरवाजा बंद करते हुए बोला, 'निकल जाओ पिछवाड़े की राह चुपचाप। नहीं तो आज खून कर डालूंगा।'

'मार डालो। मैं जीना नहीं चाहती।'

'मार डालूंगा गला टीपकर।

'मारो। प्रदीप के बा···! आ···आक।

'बोल, कल से तू आंगन के बाहर पैर रखेगी ?

'नहीं रखूंगी।'

'किसी से हंसेगी बोलेगी नहीं। बोल !'

'नहीं।'

'मिस्तरी से ?'···'नहीं।' 'उस लाला के बेटे से ?'···नहीं।' 'लाल गाड़ी के ड्राइवर से ?'···'नहीं !' नहीं ! नहीं।···प्रदीप के बाबू उ-उ-उ !···'प्रदीप की माय उजागिर की छाती से मुंह सटाकर बिलखने लगी।

सड़क से एक ट्रक हड़हड़ाती हुई गुजर गई। ●

न्यूजीलैंड के दौरे पर जाने वाली भारतीय क्रिकेट टीम का

दीवाना परिचय



चन्द्र शेखर

चल पड़े तो अद्‌भुत गेंद बाज ! अकेले ही एक मैच जिता सकता है, और चार हरवा देता है !



सोलकर

सोलकर ! अच्छे फील्डर । जितने रन बनाते हैं उससे ज्यादा फीलिंडग में बचाते हैं ।



विरमानी कृष्ण मूर्ति

दोनों विकेट कीपिंग करते हैं जब इंजीनियर को जुकाम होता है ।



सुधाकर राव

टैस्ट में अचानक निर्वाचन ! और अचानक ही भुलाये जाने की संभावना !



वेंग सरकार

वलि का वकरा ! चल पड़ा तो ठीक नहीं तो हमेशा के लिये छुट्टी का खतरा ।



सुरिन्दर अमरनाथ

सैंचुरी खड़काने की क्षमता कई साल टैस्ट सिलेक्शन के दरवाजे खड़काते रहने का अनुभव !



बिशन बेदी

टीम के कप्तान ! गेंद वाज, गेंद पर गजब का नियंत्रण और जुबान पर उसी गजब का अनियंत्रण, इसीलिये अब तक कई बार अधिकारियों से तू-तू मैं-मैं !



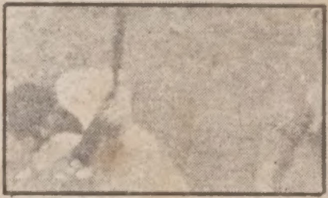
प्रसन्ना

ऑफ स्पिनर ! एक इनिंग्स में तीन-चार विकटें लेते हैं और आठ-दस कैच छोड़ देते हैं, मोटापे के कारण हलवाई का धोखा !



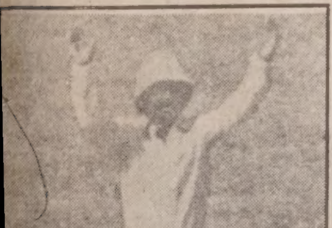
मदन लाल

तेज गेंदबाजों का सामना करते समय खुद विकटों पर गिर कर स्टम्प तोड़ देते हैं । कोई खास चोट न आये तो वॉलिंग भी करते हैं ।



बृजेश पटेल

सीरीज हार जाने के बाद अंतिम टेस्ट में रन बनाता है । पचास रन बनते हैं तो काले कपड़ों वाली कोई लड़की आकर चूम जाती है और वह उसके फौरन बाद आउट हो जाता है ।



वेंकट राघवन

कभी कप्तान बनते हैं तो कभी बारहवें खिलाड़ी । हेमा के साथ पारी शुरुआत की कोशिश, पर हेमा की मां ने पहले बॉल में ही क्लीन बोल्ड किया !



पार्थ सारथी शर्मा

अपने पार्टनर को रन आउट कराने में दक्ष ! किस आधार पर इन्हें टैस्ट में लिया गया एक टॉप सीक्रेट है जिसका भेद C. I. A. भी लेने में असमर्थ रहा है ।



विश्वनाथ

मध्य क्रम का विश्वस्नीय बल्लेबाज ! विश्वस्नीय इस लिये कि या तो जीरो पर उड़ता है जीरो पर न उड़ा तो तीस से कम रन नहीं बनाता !



सुनील गवास्कर

उप कप्तान ! फिल्म अभिनेता, विविधभारती पर फौजी भाइयों के लिये गाने पेश करते हैं और ऑटोग्राफ देने के बाद समय बचा तो बैटिंग भी करते हैं !

इस सप्ताह का चित्र दीवाना तेज फ्रेंडस क्ल

जिस पाठक का शौक सबसे अजीब होगा उसका चित्र बड़े चौखटे में छापा जाएगा, ताकि सभी दीवाने उसकी दीवानगी का पूरा मजा उठायें।



तापस उपाध्याय, द्वारा सिंहा सन साहब का मकान, कंकड़ बाग रोड, कुम्हार टोली, पटना, १७ वर्ष, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलना।



सोरियाजुद्दीन कुरैशी, कुरैशी टेलरिंग हाउस, बालोद जि० दुर्ग (म०प्र०), २० वर्ष, ड्राविंग करना, मन लगाकर पढ़ना।



अनिल कुमार गोविन्दानी, ३६३ मलैया, रानी महल, झांसी, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



याद राम यादव ... ठाकुर ... १४ वर्ष ... करना, जेब काटना।



बाल कृष्ण शिवडा, म० नं० ११४५ बी, पानीपत, १७ वर्ष, फोटोग्राफी करना तथा पिक्चर देखना।



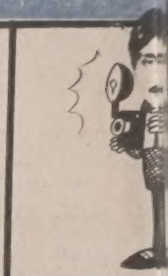
अशोक कुमार दत्ता, दीवाना क्लब, १३ वर्ष, पत्र व्यवहार करना, दीवाना पढ़ना, तथा सैर करना।



अजय कुमार अग्रवाल, ५/५०, पन नगर, विश्वविद्यालय, पन नगर, २१ वर्ष, बैडमिंटन खेलना, तथा उपन्यास पढ़ना।



देवानन्द, २, महावीर वन्द करनाल, १७ वर्ष, टेबिल टेनिस खेलना, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



मुहम्मद अमीमुद्दीन ... कल रोड ... चौक ... २२ वर्ष, फोटो खींचना ...



रविन्द्र कालरा, भूर्ण हाऊस, म० नं० ९-६, राई, १४ वर्ष, मक्खियों का शिकार करना, परोपकार करना।



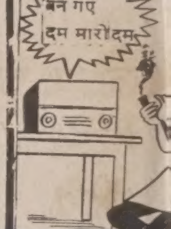
अकशोयब, शोयल वर्क, हेल बावड़ी, सिम्मल दरवाजा, नासिक सिटी, २१ वर्ष, रम्मी खेलना, ब्रान्डी पीना।



महेश कुमार चौधरी, चौपड़ा कटला, रानी बाजार, (बीकानेर), १६ वर्ष, गधों से दोस्ती करना।



नरेश कुमार मेहीदत्ता, रकवाल मंजिल, पत्थर घटी रिवाड़ी, १४ वर्ष, सिगरेट पीना, दीवाना पढ़ना।



श्रीकान्त प्र० श्रीवास्त... भरिया (धनबाद), ... दीवाना पढ़ना।



दावा लामा, भोलाहिर ११/१२३, (नेपाल), १८ वर्ष, मोटर साईकल चलाना, लड़की से प्यार करना।



जयपाल सिंह, म० नं० ६, पटेल नगर, १६ वर्ष, समुद्री जहाज चलाना, अखबार पढ़ना, पत्र-मित्रता।



बलजीत सिंह डंग, ग्रा० पो० निरसा, चट्टी जि० धनबाद, १२ वर्ष, बैठे-बैठे मक्खी मारना।



अरुण कुमार जैन, डालटेन गंज, (पलामु), १६ वर्ष, चित्र बनाना, दीवाना पढ़ना, हजामत बनाना।



किशन चन्द अरोड़ा, ... फरीदाबाद (हरियाणा), ... बैठना।



हरवन्त सिंह गनहास, ८५, चांद नगर, जम्मू (तवी), २३ वर्ष, पत्र-मित्रता, टिकट संग्रह करना।



सुखमिन्द्र सिंह ओबरा, सुखमिन्द्र सिंह गोल्ड स्मिथ, सिरकी बजार, बाड़ा, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



जसपाल सिंह, म० नं० २३२१ सी, शादीपुर मन्दिर वाली गली, १६ वर्ष, सीतार बजाना, दीवाना पढ़ना।

दीवाना तेज फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर पेन फ्रेंडशिप ... फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट ... के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित क... लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेंड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा ना...

हमारा पता :-दीवाना तेज साप्ताहिक, ८-ब बह...
जफर मार्ग नई दिल्ली-१

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में ही साफ-...

नाम ____________________

पता ____________________

आयु ________ शौक ____________

बढ़ता देश हमारा

घर लोगों के लिए घर

ी क्षेत्रों में भूमिहीन मजदूरों को अब जमीन दी जा रही है; 32,42,406 मकान की जगहें पहले ही दी जा चुकी हैं । 20-सूत्री कार्यक्रम के अधीन अब और क जगहें दी जाएंगी ।

ों के लिए मकान बनाने की नौ योजनाओं पर कार्य हो रहा है; निर्माण के लिए 8.8 लाख मकानों में से 6.43 लाख बनाए जा चुके हैं ।

संकल्प और मेहनत से हम बढ़ेंगे



ों को मकान' पुस्तिका मुफ्त पाने के लिए
ा इस पते पर लिखें :
रण प्रबंधक, डी०ए०वी०पी०, 'बी' ब्लाक,
रबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001.

davp 75/453

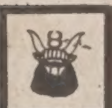
साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा
सुपुत्र दैवज्ञभूषण
पं० हंसराज शर्मा

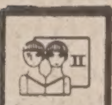
१९ जनवरी से २५ जनवरी १९७६ तक



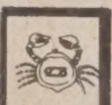
मेष : पिछले सप्ताह की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा व्यतीत होगा, व्यवसाय में तरक्की महसूस होगी तथा अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकेंगे, कई रुके कार्य बनने की उम्मीद बढ़ेगी, यात्रा भी लाभप्रद रहेगी।



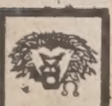
बृष : २१ जनवरी से हालात आपके अनुकूल चलेंगे, सेहत में सुधार होगा तथा व्यापार की स्थिति भी सुधरेगी, फिर भी औषधि आदि पर विशेष व्यय होगा, संतान का सुख पूर्णरूप से प्राप्त होगा।



मिथुन : कारोबार एवं घरेलू हालात अनुकूल चलने पर भी आप व्यर्थ की चिन्ताओं से परेशान, पारिवारिक सुख अच्छा परन्तु उदासी का प्रभाव रहेगा, दोस्तों का साथ प्रसन्नचित्त बनाने में सहायक सिद्ध होगा।



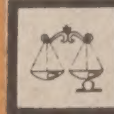
कर्क : शुक्रवार को दोपहर से रविवार सांय तक नेष्ठ है, यात्रा स्थगित कर दें, यह समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा, अन्य दिनों में कारोबार से धन का लाभ, भाग्य भी साथ देगा, अतः आप अच्छा समय व्यतीत करेंगे।



सिंह : मंगलवार तक हर प्रकार से सावधान रहें, सेहत में खराबी, शत्रु से भय, बुधवार से बदकिस्मती आपका साथ छोड़ेगी, कारोबारी हालात सुलझेंगे, सरकारी कामों में सफलता, आमदनी अधिक, रविवार को यात्रा न करें।



कन्या : समय आपके अनुकूल है फिर भी फायदा न उठा सकेंगे, संतान के प्रति खर्च होगा, से यथार्थ लाभ, किस्मत आप पर मेहरबान, मिलेगा, व्यय अधिक, सोम-मंगल को नया काम



तुला : वक्त और किस्मत इस दौरान आप पर रहेंगे तथा घरेलू जीवन में सुख चैन महसूस करें अतः बुधवार से समय अच्छा व्यतीत होगा, लाभ, परन्तु बुधवार से शुक्रवार तक यात्रा न



बृश्चिक : घरेलू और स्वास्थ्य इस सप्ताह में रहेंगे, कारोबार में आप दिल लगा कर काम अच्छी आमदनी होगी, संतान की ओर से चि परंतु बन्धुओं से चिन्ता रहेगी, स्त्री से सुख प्राप्त



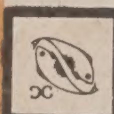
धनु : कारोबार के लिए यह एक सफल सप्ताह वार से घरेलू जीवन में अशांति का कारण परेशानियां दूर होंगी, सेहत में भी आप अच्छी महसूस करेंगे, भाग्य सहारा देगा, अच्छा वातावर



मकर : यद्यपि इस समय भाग्य आप पर पूरी मेहरबान है और आप कारोबार में कामयाबी कर रहे हैं फिर भी मंगलवार से चौकस रहें, आदि के कामों में अधिक व्यय, वातावरण में अ



कुम्भ : स्त्री या ससुराल की ओर से चिन्ताएं पैदा भारी संकट का सामना करना पड़ेगा फिर भी आपका साथ दे रही है, अंत में आपकी विजय शत्रु मुँह की खायेंगे फिर भी कारोबार में रुकावट



मीन : हर प्रकार से यह सफल सप्ताह है घरेलू कारोबार मामलों को बेहतरीन बना महान कामों को पूरा करने में कामयाबी प्राप्त हो लोहा मानेंगे, सफर में सुख, शुक्रवार, शनिवार

चना कुरमुरा

● एक शरमीला युवक एक युवती से विवाह करना चाहता था। लेकिन वह सोचता था कि विवाह का शब्द मुख से निकलते ही वह लज्जा से मर जाएगा। इस समस्या पर बहुत सोच-विचार करने के उपरान्त एक संध्या को वह युवती से फुसफुसाया, 'क्या तुम मेरे हाथों से अपनी चिता में आग लगवाना पसन्द करोगी ?'

● 'क्यों भई, इतने दुखी क्यों हो ?'

'मैंने एक युवती से विवाह का प्रस्ताव किया था पर उसने उसे ठुकरा दिया।

'तो इसमें दुःखी होने की क्या बात है, और बहुत लड़कियां हैं।'

'हैं तो, पर मुझे तो उस बेचारी के लिए दुःख है कि मेरे समान अच्छा लड़का उसने खो दिया।'

● ज्योतिषी—तो आप अपने भावी पति के विषय में क्या जानना चाहती हैं ?

युवती—मैं उनके भूत काल के विषय में जानना चाहती हूं ताकि उसका भविष्य में सदुपयोग कर सकूं।

● उसने रीता से सगाई तोड़ दी तो उसके मित्र ने पूछा, 'तुम तो उससे बहुत प्यार करते थे, फिर सगाई क्यों तोड़ दी।'

'भाई, वह सगाई के बाद विवाह करने पर भी आमदा थी।' उसने सगाई तोड़ने का कारण बताया।

● पांच अफीमची दोस्त अफीम अपने गांव की ओर जा रहे थे। रा उन्हें प्यास लगी। दूर जाकर उन्हें ए दिखाई दिया। परन्तु उस पर स थी। एक ने कहा : देखो यारों—कु मिल गया किंतु धूप के कारण इसका गरम होगा। सभी जोर लगाओ औ छाया में ले चलो।'

सभी ने एक आवाज होकर 'ठीक है।' और अपना-अपना सिर क दीवार से लगा दिया और लगे जोर ल इसी बीच उनका नशा तेज हो गया सबके सब वहीं ढेर हो गये।

दिन ढले एक को होश आया उसने देखा कि कुआं अब छांव में है

चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा 'बस यारों, अब बस करो यारों, अब बस देखो कुआं छांव में आ गया है। कहीं न हो कि ज्यादा धक्के देने से फिर चला जाये।'

तेज प्रैस नया बाज़ार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्ना लाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध संपादक विश्वबन्धु गुप्ता।